चन्दामामा
जनवरी १९९७

भारत में सर्वाधिक
बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
प्राण
चाचा चौधरी-15
चाचा भतीजा और
सुनहरी कबूतर
पिन्टू और
गरुड़ देवता
महाबली शाका
और शैतानी निशान
जेम्स बाण्ड-52
अग्निपुत्र अभय
और मौत का जलजला
लम्बू मोटू और
मि. ग्रेजुएट
मैण्ड्रेक-49
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-62

चन्दामामा

जनवरी १९९७

एक प्रति : ६.००
वार्षिक चंदा : ७२.००

अपने चहेते क्रिकेट हीरो से मिलें, आज ही !

World Cup-96 Achievers Collection

FREE

Cricketer Card With Every Pack

सिर्फ़ Rs.13.50

- स्वादिष्ट
- किफ़ायती
- बनाने में आसान

हलो क्रिकेट फ़ैन्स.
अब आपको रसना स्प्रेड मेकर स्वादिष्ट ही नहीं, रोमांचक भी लगेगा.
क्योंकि जब जब आपकी मम्मी इसमें से 500 ग्राम मज़ेदार रसना स्प्रेड बनाएंगी, तब तब आपको एक एक दिलचस्प क्रिकेटर कार्ड मिलेगा. जी हाँ, रसना स्प्रेड मेकर के हरेक पैक के साथ एक क्रिकेटर कार्ड बिल्कुल मुफ़्त! खास आपके लिए. हुई न दोहरे फायदे की बात. जी चाहा तब खाया. दिल किया तब खेल लिया.
यही नहीं, अपनी सैन्डविच, चपाटी, या पूरी का स्वाद भी उभार लिया.
रसना स्प्रेड मेकर के साथ.

पैक्स इस ऑफ़र के बग़ैर भी उपलब्ध हैं.

Mudra:EAMR:9610 Hin.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

पाठशालाओं में राजनीति

माता-पिता तथा बच्चों के लिए १९९६ महत्वपूर्ण वर्ष है। हमारे देश के एक उच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक न्याय-निर्णय सुनाया, जिससे पाठशालाओं में राजनीति बहिष्कृत क़रार की गयी। न्यायाधीश ने कहा कि राजनैतिक दल पाठशालाओं की साधारण गतिविधियों में हस्तक्षेप न करें। देश के कुछ अन्य राज्यों में भी ऐसे ही न्याय-निर्णय के लिए तत्संबंधी अदालतों में जाने के प्रयत्न जारी हैं।

कुछ वर्षों से हमारे देश में देखा जा रहा है कि विद्यार्थियों के संसदों तथा संघों के चुनावों के अवसर पर राजनैतिक दल अपने उम्मीदवारों को खड़ा कर रहे हैं और उन्हें भरसक मदद पहुँचा रहे हैं। यह मदद करपत्रों, वाहनों, पोस्टरों तथा धन द्वारा पहुँचायी जा रही है। जहाँ ऐसे चुनाव शांतिपूर्ण वातावरण में हो सकते हैं वहाँ तनाव पैदा हो रहा है। एक-दूसरे के कट्टर शत्रु बन रहे हैं और चुनावों के परिणामों की घोषणा के बाद विजयोत्सव के अवसर पर हत्याकांड हो रहा है। मित्रता, शत्रुता में बदल रही है।

पाठशालाओं के अधिकारी व अध्यापक इस विषैले परिणाम को चुपचाप देखते रह जाते हैं, क्योंकि वे लाचार हैं। बाहर के लोगों के हस्तक्षेप के कारण विद्यार्थियों पर उनका कोई अधिकार रह नहीं जाता। माता-पिता भी इस बात पर चिंतित हैं कि इन कार्यकलापों के कारण उनके बच्चों का ध्यान बंट रहा है और उनकी शिक्षा में खलल पड़ रही है।

यह सच है कि विद्यार्थी संघों का उद्देश्य है-नेतृत्व के गुणों को बढ़ावा देना। किन्तु भूल रहे हैं कि उनका लक्ष्य शिक्षा-प्राप्ति है। जो उनके भविष्य को उज्वल बनाती है, जिसके द्वारा वे समाज, देश तथा अपने परिवार की तन, मन, धन से सेवा कर सकते हैं। विद्यार्थियों का लक्ष्य अपनी ज्ञान-वृद्धि हो, जो उन्हें पाठशालाओं द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

'चन्दामामा' के पाठकों को नववर्ष के अवसर पर हार्दिक बधाइयाँ

वर्ष : ४७ जनवरी १९९७ अंक : ४
एक प्रति : रु. ६/- वार्षिक चन्दा : रु ७२/-

पोलियो-मुक्त भारत
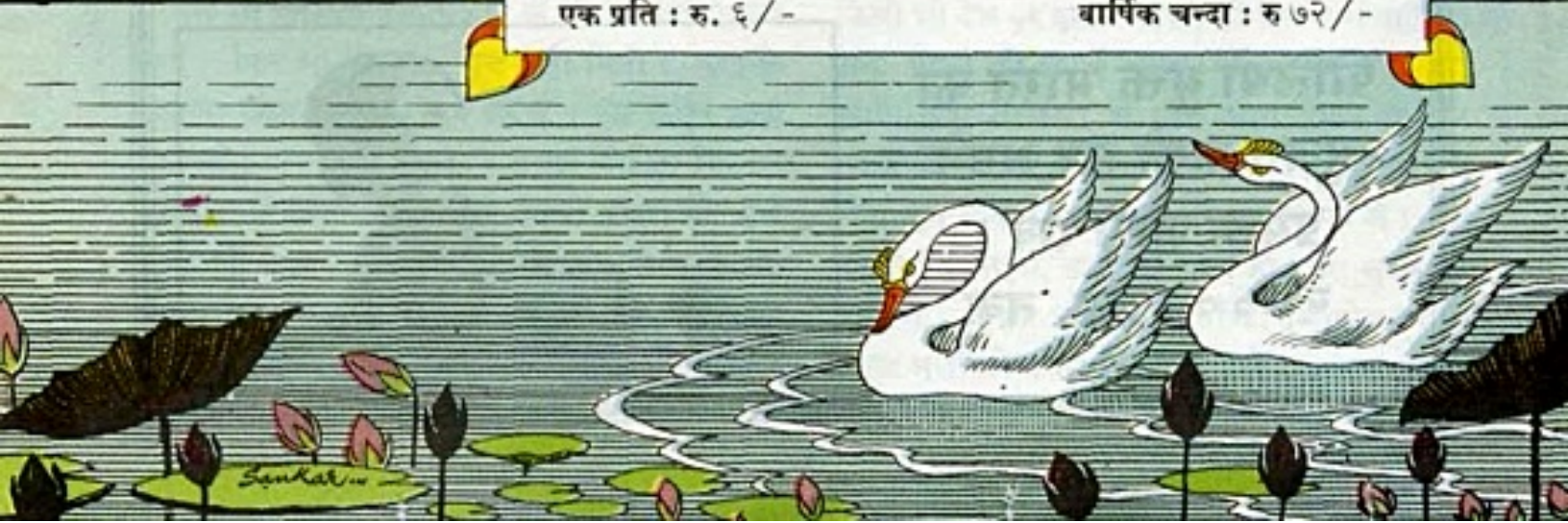
लक्ष्य की प्राप्ति दूर नहीं
अगला क़दम होगा

राष्ट्रीय असंक्रमीकरण के दिन:

दिसंबर ७, १९९६

जनवरी १८, १९९७

माता पिताओं से विनती

शिशु की तबीयत के ठीक न होते हुए भी दस्त होते हुए भी इसके पहले भी शिशु को पोलियो टीका-द्रव्य दिये जा चुके हों, फिर भी

सौ फ़ी सदी सुरक्षा सुनिश्चित करने

याद रखें

अपने बच्चों को (पाँच साल से कम)
असंक्रमीकरण की कक्षिका पर ले जाएँ

दो अतिरिक्त मौखिक पोलियो

टीका-द्रव्य लेने

राष्ट्रीय असंक्रमीकरण के दिन

हमारे देश का भविष्य हमारे
शिशुओं के स्वस्थ जीवन
पर आधारित है।

POLIOPLUS

**पोलियो मुक्त भारत का
सृजन करने हम अपने
प्रयत्न ज़ारी रखें।
२००० ए.डि. तक**

समाचार-विशेषताएँ

आहार सबको

इटली की राजधानी रोम नगर में नवंबर महीने में विश्व आहार महासभा संपन्न हुई। उस महासभा में लगभग १९० देशों ने भाग लिया। चालीस देशों से उन-उन देशों के अध्यक्ष पधारे। चालीस और देशों से उन-उन देशों के प्रधान मंत्री भी आये। शेष देशों से उन-उन देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

जितने भी उस सभा में उपस्थित थे, सबकी यही राय थी कि विश्व भर में भूख मिटानी है। इस विषय में किसी भी प्रतिनिधि का भिन्न अभिप्राय नहीं था। परंतु इस विषय में भिन्न-भिन्न अभिप्राय थे कि यह कब संभव होगा ? भारत के प्रधानमंत्री श्री देवे गौडा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए अपनी इच्छा प्रकट की कि ई.स. २००० जनवरी तक विश्शव में भूख मिटा दी जाए और तब से कोई भूखा न रहे। उन्होंने विश्व के नेताओं से विनती की कि इन तीन सालों के अंदर भूख का निर्मूलन हो।

भूख की पीड़ा से बचने का हक़ हर एक को है। यह उसका प्राथमिक हक़ है। रोम की सभा ने इसका दृढ़ीकरण किया। विश्व में अब भूखों की संख्या लगभग अस्सी करोड़ है। इस सभा ने घोषणा की कि अगले बीस सालों के अंदर यह संख्या आधी हो। बीस सालों के पहले जो सभा संपन्न हुई, उसमें भी क़रीबन् इसी प्रकार के निर्णय की घोषणा हुई। फिर भी विश्व में भूख नहीं मिटी। भूख के कारण लोग लगातार मर रहे हैं। इस कडुवे सत्य को कोई भूल नहीं सकता। समझ लीजिए कि इस घोषणा के अनुसार ही अगर आधी संख्या की भूख मिट भी जाए तो बाक़ी ४० करोड़ों की भूख कब मिटेगी ? इस प्रश्न का समाधान न मिले तो इससे बढ़कर विडंबना और क्या हो सकती है। आहार की कमी क्यों है ? इस प्रश्न के अनेकों उत्तर हैं। कितने ही कारण हैं। आवश्यकता के समान फ़सलों का न होना, फ़सलों की पहुँच सब तक न हो पाना, मुख्य कारण कहे जा सकते हैं। आबादी बढ़ती जा रही है, यह भी एक प्रधान कारण है।

हमारे देश में सही दामों पर सरकार ही रेशन दुकानों के द्वारा आहार पदार्थ जनता को पहुँचा रही है। तद्वारा आर्थिक क्षेत्र में पिछड़े लोगों की सहायता करना इसका मुख्य उद्देश्य है। यह सब जानते हैं कि ये आहार पदार्थ मात्रा में कम हैं और इनसे बलहीन वर्गों के लोगों की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो रही हैं।

कहा जा सकता है कि यह कमी आहार पदार्थों का सही उपयोग न करने के कारण भी हो रही है। यह भी देखा गया है कि कुछ देशों में, जहाँ फ़सल अधिकाधिक हो रही है, आहार पदार्थ समुद्र में फेंके जा रहे हैं। वे अधिक दाम पाने के उद्देश्य से यह काम कर रहे हैं। इसमें इनका केवल व्यापारिक दृष्टिकोण व स्वार्थ है।

अब रोम की महासभा की घोषणा पर विचार करें तो यह साफ़ है कि यह केवल घोषणा मात्र है। वे किसी भी देश पर दबाव डालने की स्थिति में नहीं हैं। अतः विश्व की संपूर्ण जनता को आहार लभ्य हो, इसके लिए सरकारों के साथ-साथ विश्व के सब लोगों को प्रयत्नों में जुटना है। इस दिशा में हम सब लोग कम से कम एकसूत्र में बंधकर निर्णय लें। वह यह है कि आहार सभी को लभ्य हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हम आहार-पदार्थों का दुरुपयोग न करें; संपन्न भूखों की यथाशक्ति मदद करें।

तंबालु भूत

सीताराम पियक्कड़ था। अपनां खेत, घर आदि बेच दिया। सही चिकित्सा के अभाव में उसकी पत्नी मर गयी। इकलौते बेटे राजा को भी चमन को बेच दिया। चमन इसके लिए हर दिन शराब पीने के लिए उसे पैसे देता रहता था।

यों समय गुज़रते-गुज़रते सीताराम मर गया। पिता के दहन-संस्कार के बाद राजा ने चमन से कहा ''यजमान, इतने दिनों तक आपने मेरी जो मदद की, उसे कभी नहीं भूलूंगा। इस गाँव में मेरी माँ मर गयी, मेरे पिता का देहांत हुआ। मैं अब अनाथ हूँ। मैं यहां रह नहीं पाऊँगा। ऐसी जगह चला जाऊँगा, जहाँ मुझे कोई नहीं जानता हो। कहीं चले जाने पर ही मेरा मन शांत रह पायेगा।''

चमन ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा, ''मैंने तुम्हारे मन की पीड़ा जान ली है। किन्तु मेरी स्थिति तुम भी जानो। तुम्हारे पिता ने शराब के लिए अपनी पूरी जायदाद बेच दी। उसके बाद तुम्हारे पिता का पूरा खर्च मैंने उठाया। तुम तो जानते ही होगे कि मैंने इसके लिए कितना खर्च किया होगा।''

राजा ने पूछा ''कहिये, अब मुझे क्या करना होगा ?''

''तुम्हारे पिता सीताराम ने तुझे मेरा गुलाम बनाकर बेच दिया। फिर भी मेरी दृष्टि में तुम मेरे गुलाम नहीं हो। तुमसे ऐसा व्यवहार भी नहीं करूँगा। दोनों वक्त खिलाऊँगा। बस, मेरे घर का पूरा काम-काज संभालो। तुम्हें यह मंजूर नहीं तो मेरे तीन काम करो और हमेशा के लिए आज़ाद हो जाओ।'' राजा ने पूछा कि बताइये, वे तीन काम क्या हैं ?

गाँव की सरहद में पहाड़ी प्रदेश में चमन की चार एकड़ों की खुश्क भूमि है। उसे कोई खरीदेगा नहीं, क्योंकि उसमें कोई फ़सल नहीं होती। राजा का पहला काम होगा, उस खेत को उपजाऊ बनाना।

''जिस खेत में फ़सल नहीं होती, उस खेत को मैं कैसे उपजाऊ बना सकता हूँ? ऐसा काम सौंपना आपको शोभा नही देता।'' राजा ने कहा।

''मेहनत करोगे तो कोई भी काम असाध्य नहीं। किसी भी प्रकार की भूमि उपजाऊ बनायी जा सकती है। कौन नहीं चाहता कि मेहनत करूँ और खेत को उपजाऊ बनाऊँ। तुम आज़ादी चाहते हो तो तुम्हें मेहनत करनी होगी। मैं कोई ज़बरदस्ती थोड़े ही कर रहा हूँ। निर्णय तुम्हारे हाथ में है।'' चमन ने कहा।

राजा ने यह काम अपने हाथ में लिया और उस खुश्क भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए कड़ी मेहनत की। एक दिन जब वह ज़मीन खोद रहा था, खन्खन् की आवाज़ आयी। आश्चर्य में डूबा वह और गहरा खोदता गया। वहाँ उसे तांबे का एक घड़ा मिला। उसने जैसे ही उसका ढक्कन खोला, उसमें से धुआँ निकला। देखते-देखते धुआँ भूत का आकार बना और वह भूत पूछने लगा ''बोलो, तुम्हें क्या चाहिये? तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।''

राजा ने चकित होकर पूछा ''तुम कौन हो? मेरी इच्छा को पूर्ण करने की तुम्हें क्या आवश्यकता है?''

''मैं तांबे के घड़े का भूत हूँ। इस घड़े की शक्तियाँ अद्भुत हैं। अपनी इन शक्तियों द्वारा भले लोगों की मदद करना मेरा कर्तव्य है।'' भूत ने कहा। राजा और चकित होता हुआ बोला ''तुम्हें कैसे मालूम कि मैं भला आदमी हूँ?''

''मैं बता चुका हूँ कि तांबे का यह घड़ा महिमावान है। जैसे ही भले लोग इसे छूते हैं, यह मुझे प्रेरित करता है।'' भूत ने कहा।

राजा ने पूछा ''क्या मैं यह जान सकता हूँ कि तुमने तांबे के इस घड़े में कैसे प्रवेश किया?''

''तुम्हारा इससे क्या मतलब? मुझसे मदद पाओ और सुख से अपना जीवन चलाओ।''

भूत ने सलाह दी।

क्षण भर सोचने के बाद राजा ने कहा "तो सुनो। मैं एक गुलाम हूँ। आज़ादी पाने के लिए छटपटा रहा हूँ। तरह-तरह की तक़लीफ़ें झेल रहा हूँ। मुझे तो लगता है कि तुम तांबे के इस घड़े के गुलाम हो। अपनी तक़लीफ़ों को दूर करने के लिए किसी एक और गुलाम को तक़लीफ़ पहुँचाना मेरी दृष्टि में पाप है, अपराध है।"

"तुम सचमुच बहुत ही अच्छे आदमी हो। मैं तुम्हें एक कहानी बताऊँगा। ध्यान से सुनो" भूत ने कहा और कहानी सुनाने लगा।

बहुत पहले शीतलपुर में दुर्जय नामक एक व्यापारी था। वह बहुत ही दुष्ट था और स्वार्थी था। अपने भाइयों की जायदाद हड़प ली और उन्हें घर से निकाल दिया। विश्वासपात्र जिगरी दोस्त गोपी को भी उसने धोखा दिया और उसे कंगाल बना दिया।

गोपी जंगल गया और वहाँ उसने घोर तपस्या की। फलस्वरूप उसे दिव्य शक्तियाँ प्राप्त हुई। वह गांव लौटा और दुर्जय से मिलकर उसने कहा "तुमने अनेकों पाप किये। उनसे मुक्त होने का मार्ग बताऊँगा। इसके पहले अपना सर्वस्व दरिद्रों में बाँट दो।"

दुर्जय ने कहा कि मैं तुम्हारे कहे अनुसार ही करूँगा। उसने अपनी संपत्ति परिचित लोगों में ही बाँटी और उनसे वादा लिया कि जब वह चाहेगा तब वे संपत्ति को उसे लौटा देंगे।

गोपी ने, दुर्जय के सामने तांबे का एक घड़ा रखा और कहा "यह अद्‌भुत शक्तियाँ रखता है। पवित्र हृदय से इसे छुओगे तो तुम्हारे सारे पाप धुल जायेंगे। तब हम दोनों जंगल जाएँगे और वहीं अपना शेष जीवन बिताएंगे।"

दुर्जय ने पूछकर जाना कि उस घड़े की क्या-क्या अद्‌भुत शक्तियाँ हैं। जान लेने के बाद उसने गोपी से कहा "मैं जंगल नहीं आऊँगा। यह घड़ा मुझे दे दो और चले जाओ।"

गोपी ने उसकी बात नहीं मानी। दुर्जय ने जबरदस्ती उस घड़े को अपनाना चाहा। बस, वह एक भूत के रूप में बदल गया और घड़े में प्रवेश किया।

गोपी ने गहरी साँस लेते हुए कहा "दोस्त होने के नाते मैं तुम्हारी मदद करना चाहता था। तुम्हारा उद्धार करना चाहता था। किन्तु स्पष्ट है कि तुम इस भाग्य के हक़दार नहीं हो। अभी तुम्हें भूमि में गाड़ दूँगा। जिस दिन तुममें सद्‌बुद्धि जगेगी, उस दिन एक भले आदमी से तुम मिलोगे। उसकी सहायता करो। तुम्हारे

पाप धुल जाएँगे और तुम्हें मोक्ष प्राप्त होगा।''

तांबे के घड़े में बँद दुर्जय बहुत सालों तक घड़े के ही अंदर रहकर गोपी को कोसता रहा, उसे शाप देता रहा। क़रीबन् सौ सालों तक वह घड़े में बंद रहा। हाल ही में उसके मन में पश्चात्ताप की भावना पैदा हुई। धीरे-धीरे वह अपने पापों पर पछताने लगा। उसे लगा कि किसी भले आदमी की मदद करना मेरा परम धर्म है।

''तो समझ गया कि तुम्हीं दुर्जय हो। अब मेरी भी कहानी सुनो'' राजा ने अपनी कहानी दुर्जय को सुनायी।

भूत ने तुरंत कहा '' मेरी अद्‌भुत शक्तियाँ किसी भी असंभव बात को संभव बना देती हैं। इस खुश्क ज़मीन को उपजाऊ बनाना मेरे बायें हाथ का खेल है।'' कहकर वह कोई मंत्र पढ़ने लगा। थोड़े ही समय में खेत में हरियाली छा गयी। पूरा खेत अनाज के अंकुरों से भर गया।

राजा ने पूछा ''कहो, अब मैं क्या करूँ ?''

''मेरे बारे में अपने मालिक से कुछ मत बताना। मैं तांबे के इस घड़े में ही बंद रहूँगा। तुम लौटो और अपने यजमान से पूछकर जानो कि वे दो और बाक़ी काम क्या हैं।'' भूत ने उससे कहा।

राजा चमन के पास गया और उसने बताया कि खेत उपजाऊ बन गया; आनाज के अंकुर भी निकल आये। यह सुनकर चमन को आश्चर्य हुआ।

यह विचित्रता देखने के लिए खुद खेत देखने चल पड़ा। उसके साथ उसकी बेटी शारदा भी आयी। वहाँ पहुँचकर हरे-भरे खेत को देखकर दोनों भौंचक्के रह गये।

राजा ने पूछा ''अब कहिये, मेरा दूसरा काम क्या है ?''

''तुम कोई साधारण आदमी तो नहीं हो। तुम्हारे पास अद्‌भुत शक्तियाँ हैं। नहीं तो यह कैसे संभव होता ?'' कहकर चमन ने कंधे पर

से अपना दुपट्टा निकालकर ज़मीन पर बिछा दिया और कहा ''इसे अशर्फ़ियों से भर दो।''

राजा तांबे के घड़ें में बंद भूत से मिलना ही चाहता था कि इतने में उसने देखा कि दुपट्टे पर अशर्फ़ियों की बारिश हुई। चमन के आश्चर्य की सीमा नहीं रही।

राजा ने पूछा ''अब कहिये, मेरा तीसरा काम क्या है ?''

चमन कुछ कहने ही वाला था कि इतने में उसकी बेटी शारदा ने कहा ''तुम मुझसे शादी करो।''

''मैं कर लूँगा, पर उसके पहले मुझे आज़ादी चाहिये'' कहते हुए उसने चमन की ओर देखा।

चमन ने उसे तीव्र दृष्टि से देखा और कहा ''थोड़ा-बहुत जादू जान गये तो क्या इसका यह मतलब है कि मेरा दामाद बनने के ख्वाब देखने लग जाओ। भूलना मत। तुम मेरे गुलाम हो। नादान, नासमझ मेरी बेटी की बातें व्यर्थ बातें हैं। उनका कोई मायना ही नहीं। अब तुझे बताऊँगा कि तीसरा काम क्या है ?''

राजा ने धीमे स्वर में कहा ''ठीक है, बताइये, मुझे क्या करना है।''

''मैं चाहता हूँ कि तुम जैसा एक गुलाम ज़िन्दगी भर मेरे साथ रहे और मेरी सेवा करता रहे। तुम स्वयं गुलाम बनकर रहना चाहो तो रहो, नहीं तो किसी और गुलाम का इंतज़ाम भी कर सकते हो ?'' चमन ने तीसरा काम बताया।

उसकी बातें सुनते ही राजा अच्छी तरह से समझ गया कि चमन छली और कपटी है। उसे इस बात पर निराशा हुई कि मुझे इस गुलामी से मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकेगी। किन्तु अचानक उसकी बुद्धि में एक उपाय सूझा। उसने चमन से कहा ''महाशय, आपको एक गुलाम चाहिये। है न ? 'आपको' से मेरा मतलब है, उस चमन के शरीर को, जिसमें प्राण है।''

चमन ने 'हाँ' कहा। ''ऐसा ही होगा। आपके लिए एक गुलाम का इंतजाम करूँगा तो मुझे आज़ाद करना होगा। शारदा से मेरी शादी करानी होगी। मेरी शर्त आप मानते हैं ना ?''

चमन ने राजा की शर्त मान ली।

शारदा को लगा मानों राजा से उसकी शादी हो ही गयी। वह शरमाती हुई वहाँ से भाग गयी।

राजा ने मालिक से कहा ''आप क्षण भर के लिए रुक जाइये। मैं अभी यह इंतज़ाम करूँगा।''

चमन वहीं बैठ गया और बारिश की तरह बरसे इन अशर्फ़ियों को गिनने लगा।

राजा ने तांबे के घड़े के भूत से जो हुआ, सब बताया और कहा ''चमन अव्वल दर्जे का धूर्त है। मनुष्य होकर जीवित रहने के लायक़ नहीं है वह। उसे इसका कोई अधिकार नहीं। तुमने अपने पाप धो लिये और अब अच्छे आदमी बन गये। अब तुम दोनों अपने स्थान बदलो। चमन की आत्मा भूत बनकर इस घड़े में बंद होगी और तुम चमन के शरीर मे प्रवेश करोगे। अच्छे आदमी बनकर अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो। इससे तुम्हें और मुझे भी आज़ादी मिलेगी।''

दुर्जय ने राजा की अक़्लमंदी की तारीफ़ की और उसके कहे अनुसार ही किया। फिर राजा ने चमन से कहा ''महाशय, जीवित इस चमन के शरीर को, तांबे के इस घड़े के भूत को गुलाम बनाकर दे रहा हूँ। इसका यह मतलब हुआ कि मैने आपका तीसरा काम भी कर दिया। अब मुझे आज़ाद कीजिये।''

तब तक चमन की आत्मा घड़े में बंद हो गयी और बाहर निकल न पाने के कारण छटपटाने लगी। चमन के रूपधारी दुर्जय ने उसकी आत्मा से कहा ''स्वार्थ जब सीमाएँ लाँघता है तब उसकी यही स्थिति होती है। वे स्वार्थी अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार लेते हैं। अपने नाश का कारण स्वयं बनते हैं। तुम गुलाम चाहते थे और अब खुद गुलाम बन गये। पर, तुम जैसे गुलाम से मुझे कुछ लेना-देना नहीं है इसलिए तांबे के इस घड़े के साथ ही तुम्हें भूमि में गाड़ दूँगा। मुझ जैसे और तुम जैसे लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए ही गोपी ने ऐसे घड़े की सृष्टि की। वह चाहता था कि सन्मार्ग पर चलकर मैं भी संसार की थोड़ी-बहुत सेवा कर सकूँ। अब उसका लक्ष्य सफल हुआ। जितना जल्दी हो सके, अच्छा आदमी बनने की कोशिश करो।''

तांबे के घड़े को भूमि में गाड़ने के बाद दोनों घर पहुँचे। राजा और शारदा की शादी हुई। इस शादी के थोड़े ही दिनों बाद दुर्जय मर गया।

राजा ने स्वयं सुखी जीवन बिताया और साथ-साथ दूसरों को भी सुखी जीवन बिताने का सन्मार्ग दिखाया। इसलिए तांबे के घड़े के भूत को देखने का मौक़ा किसी को नहीं आया।

भूस्थापित तांबे के घड़े का भूत तो एक और चमन की प्रतीक्षा में था।

हड्डी-तोड़ मरहम

नदी के किनारे पर ही स्थित परेल गाँव के किसानों में से रामनारायण संपन्न किसान है। किन्तु वह आवश्यकता से अधिक कंजूस है। एक बार उस कमरे में साँप घुसा, जहाँ अनाज के बोरे रखे हुए हैं। एक नौकर ने यह देखा तो उसने अपने मालिक से बताया। नौकर पर चिढ़ते हुए उसने कहा ''जा, जा, लाठी से उसे मार और बाहर फेंक दे।''

''मालिक, वह कोई मामूली साँप नहीं है। गेहूँ के रंग का विषैला साँप है। उसे मारना मुझसे नहीं होगा। सँपेरे साँवले को बुला लाऊँगा।''

रामनारायण ने ''हाँ'' के भाव में अपना सर हिलाया। सँपेरा आया और बोरियों के बीच छिपे साँप को पकड़ लिया । उसे टोकरी में डाल दिया और इस काम के लिए दस रुपये माँगे।

यह सुनते ही रामनारायण ने आगबबूला होते हुए कहा, ''तुम आये, साँप को पकड़ा। इस काम में तुम्हें दस मिनिट भी नहीं लगे। इसका यह मतलब है कि हर मिनिट के लिए एक-एक रुपये की मांग कर रहे हो।''

''ठीक है, तो साँप आप अपने ही पास रख लीजिये'' सँपेरे ने कहा। कहते हुए सँपेरे साँवले ने साँप को टोकरी से निकाला और बाहर छोड़ दिया।

साँप फिर से आनाज की बोरियों के बीच छिप गया। यह देखकर रामनारायण घबराते हुए बोला, ''अरे, पहले उसे बाहर निकालो, मैं तुम्हें दस रुपये दे दूँगा।''

सँपेरे ने निश्चिंत होकर कहा ''साँप को एक बार पकड़ने के लिए दस रुपये माँगे। अब दूसरी बार पकड़नेवाला हूँ। बीस रुपये देने होंगे।'' रामनारायण को लगा, मानो उसने उसकी हड्डी तोड दी।

दूसरी बार साँप को पकड़ने के बाद उसे बीस रपये देते हुए रामनारायण ने ईर्ष्या-भरे स्वर में कहा ''हर एक मिनिट पर एक-एक रुपया कमाने लगोगे तो इस हिसाब से तुम जल्दी ही गाँव के और किसानों से धनी बन जाओगे।''
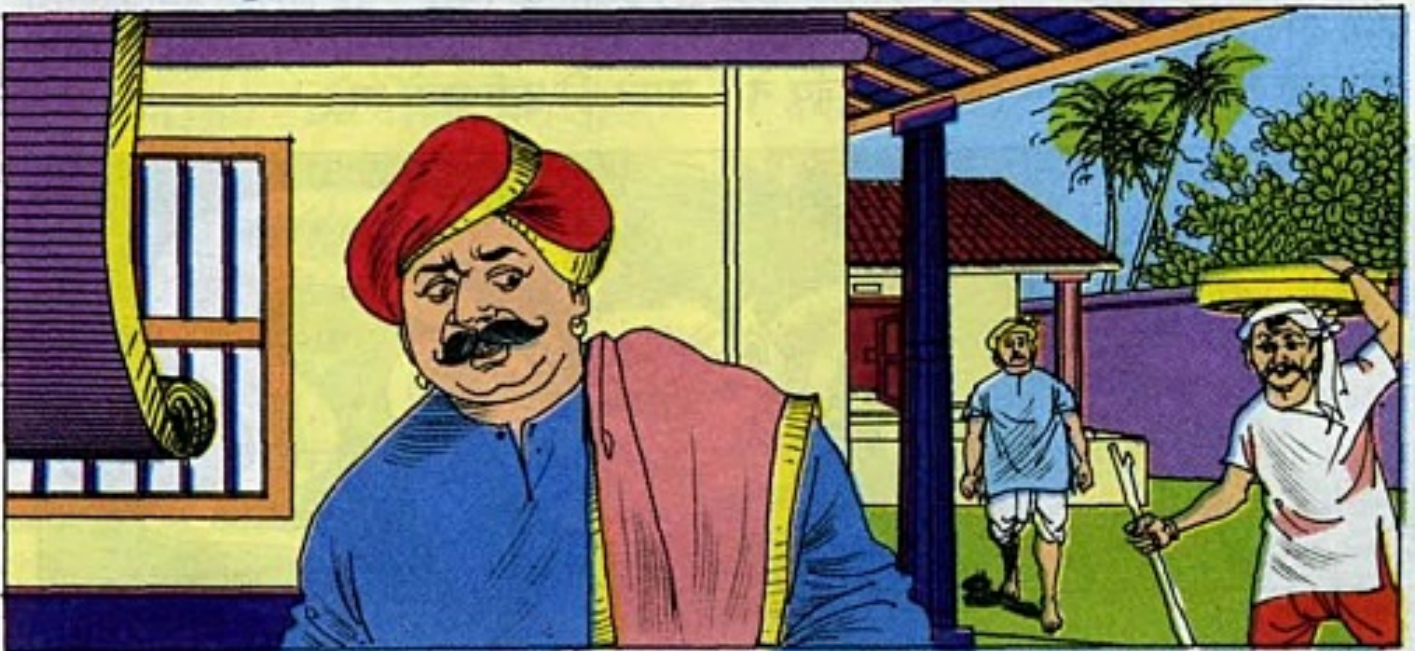
१८

रूपधर का लक्ष्य संपूर्ण हुआ। अपनी पत्नी से विवाह रचाने के उद्देश्य से घर में जमकर बैठे ग्रीक के सब राजकुमारों को उसने और उसके बेटे धीरमति ने मिलकर मौत के घाट उतार दिया। इस लक्ष्य को सफल बनाने के लिए रूपधर केवल अपने बल पर ही आधारित नहीं रहा। अपनी युक्ति का भी उपयोग किया। देवी-देवता भी उस दिन उसके पक्ष में रहे। किन्तु इस कार्य की पूर्ति मात्र से उसकी समस्याएँ सुलझ नहीं गयीं - बाद)

यह सब कुछ जब हो रहा था, तब पद्ममुखी सो रही थी। बहुकीर्ति उसके शयनागार में गयी और उससे बोली "उठो, उठो, अभी और क्या सोओगी, तुम्हारा पति आ गया। दुष्टों का संहार कर दिया। फिर से तुम्हारे अच्छे दिन आ गये।" उसने उसे जगाया।

पहले पद्ममुखी ने सुनी बातों पर विश्वास नहीं किया। संदेह करती हुई वह उठी और कहा "भगवान की लीलाएँ बड़ी ही विचित्र होती हैं। चलो, देखते हैं उस इंसान को, जिसने उन दुष्टों को मार डाला।" कहकर उस बूढ़ी को लेकर नीचे आयी और रूपधर के सामने की कुर्सी में बैठ गयी। उसका मुख भावहीन था। रूपधर सोच रहा था कि वह खुश होगी और उससे बात करेगी। किन्तु उसे मौन देखकर वह चकित रह गया। उसकी समझ में नहीं आया कि पद्मावती ऐसा व्यवहार क्यों कर रही है। वह अच्छी तरह से जानता है कि वह उसे जी-जान से चाहती है। उन दुष्ट राजकुमारों से बचने के लिए ही

को मार डाला। यह बात याद रखो। मेरी बात ध्यान से सुनो। पहले नहाकर अच्छे कपड़े पहन लें। बाद नृत्य-संगीत शुरु करें। यह सुनकर सब समझेंगे कि अंदर विवाह हो रहा है। किसी को यह मालूम नहीं होना चाहिये कि ये सबके सब मर गये हैं। इस बीच हम नगर छोड़ देंगे और जंगल में चले जाएँगे।'' रूपधर ने अपना उपाय बताया।

रूपधर के कहे अनुसार सबने स्नान किया, अच्छे कपड़े पहने, आभूषण पहने और नाचने लगे। संगीत चल रहा था। बाहर गली में घूमते हुए लोगों ने समझा ''अच्छा, लगता है कि इतनी लंबी अवधि के बाद इस घरवाली ने निर्णय लिया कि शादी करूँ। युद्ध में गये अपने पति की प्रतीक्षा और कर नहीं सकी होगी। शायद उससे रहा नहीं गया होगा।''

आज तक उसने बहाने बनाये और अब उससे मुँह मोड रही है।

''माँ, तुम मनुष्य हो या पत्थर। पिताजी से बात किये बिना एकदम चुप बैठी हो।'' धीरमति ने कहा।

''क्या बात करूँ पुत्र। मेरा हृदय ठूँठा हो गया है। अगर ये सचमुच ही तेरे पिता हैं तो मानती हूँ कि मैं इन्हें पहचान न पायी। इस घर में ऐसी कई रहस्य-भरी बातें हैं, जिन्हें हम दो ही जानते हैं।'' पद्ममुखी ने कहा।

रूपधर ने बेटे से कहा ''तुम्हारी माता को दुख मत पहुँचाओ। वह मेरी परीक्षा ले। वह अवश्य ही मुझे आसानी से जान जायेगी। इन चीथड़ों को देखकर वह समझ रही है कि मैं कोई और हूँ। हमें अपने कर्तव्य को भुलाना नहीं चाहिये। हमने इथाका के प्रमुख युवकों

रूपधर ने स्नान किया और शरीर को तेल से खूब मलवाया। वह अब एक अलग मनुष्य ही लगने लगा। उसने पत्नी पद्ममुखी से कहा ''कैसी औरत हो। बीस सालों के बाद लौटे पति को, कोई और औरत होती तो वह कितने प्यार से बातें करती और उसका कितना आदर करती।'' फिर उसने बूढ़ी से कहा ''नानी, बिस्तर बिछाओ। मैं सोऊँगा।''

पद्ममुखी ने फ़ौरन बूढ़ी से कहा ''नानी, इनकी पलंग इधर ले आना। उसपर छालें और कंबल बिछाओ।''

यह सुनते ही रूपधर की नाराज़ी बढ़ गयी। उसने कहा ''मेरी पलंग को किसने उठाकर और किसी जगह पर रख दी? वह तो उठायी नहीं जा सकती।''

इस पलंग में एक राज़ है। रूपधर ने जब यह घर बनवाया, उस समय उसके शयनागार में एक वृक्ष था। जब वह काटा गया तब उसके तने को भूमि में ही रहने दिया। उसको एक पात्र का आकार दिया और आवश्यक साधन जुटाकर पलंग बनवाया। पद्ममुखी ने ऐसा इसलिए कहा, जिससे वह जानना चाहती थी कि उसे यह रहस्य मालूम है या नहीं। अब उसके संदेह की निवृत्ति हो गयी। अपने पति को आलिंगन में लेती हुई उसने कहा "मुझसे रूठिये मत। मुझे सदा इस बात का ड़र लगा रहता है कि किसी भी क्षण किसी से ठगी जाऊँगी। इस ड़र के मारे पल-पल मैं मरी जा रही थी।"

अपनी पत्नी की इस सावधानी पर रूपधर बहुत ही खुश हुआ। अब उसका संदेह दूर हो गया कि उसने न पहचानने का नाटक क्यों किया। पद्ममुखी ने उस रात को अपने पति से उसके पूरे अनुभव सुने। सबेरा हो जाने के पहले रूपधर ने कवच पहन लिया और धीरमति को लेकर सबके साथ निकल पड़ा। किसी के देखे बिना ही वे सबके सब नगर के बाहर आ गये।

वे रूपधर के पिता पिपीलक के पास आये। पिपीलक ने बहुत पहले शासन-भार संभाला था। उसने अब यहाँ घर बसाया और पेड़-पौधों की देखभाल करता हुआ रहने लगा। अब उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही क्षीण थी।

बूढ़ा पिपीलक बाग़ में एक पौधे के चारों ओर खोदता हुआ दिखायी पड़ा। उसका कुर्ता गंदा व फटा हुआ था।

उसे देखते ही रूपधर की आँखों में आँसू उमड़ आये। उसने सोचा कि तुरंत पिता के गले मिलूँ और अपने बारे में सब कुछ बता दूँ। पर उसे शक हुआ कि वे उसे पहचान पायेंगे या नहीं। उसमें कुतूहल जगा कि देखें, वे उसे पहचान पायेंगे या नहीं। इसलिये पिता के पास आकर उसने कहा "दादा, बाग के पौधों की अच्छी तरह से देखभाल कर रहे हो। पर लगता है, तुम्हारी देखभाल करनेवाला कोई नहीं। तुम्हारे यजमान तुम्हारे काम से क्या संतुष्ट नहीं हैं ?"

"कौन हो तुम बेटे ? तुम किस देश के वासी हो ?" पिपीलक ने पूछा। "हम संचार करते रहते हैं दादा। पाँच सालों के पहले रूपधर नामक एक व्यक्ति से मुलाक़ात हुई। सुना कि इसी देश में वह रहता है। उससे

मिलने की उम्मीद लेकर आया हूँ। भेंट लेने और उसे देने आया हूँ।'' रूपधर ने कहा।

अपने बेटे का नाम सुनते ही बूढ़ा मिट्टी से भरी अपनी उँगलियों को मुख पर दबाते हुए रोने लग गया। रूपधर का मन भारी हो गया। उसने तुरंत पिता को अपने आलिंगन में लिया और कहा ''मैं ही हूँ पिताजी। बीस सालों तक अनेकों यातनाएँ सहकर देश लौटा हूँ। मेरी पत्नी से शादी रचाने की इच्छा रखनेवाले सब दुष्टों को मैंने मार डाला।''

''तुमने ऐसा क्यो किया बेटे। इथाका के लोग तुम्हें ज़िन्दा रहने देंगे ? अड़ोस-पड़ोस के राजाओं की सहायता लेकर तुमपर टूट पड़ेंगे।'' पिपीलक के स्वर में भय था।

''ड़रिये मत पिताजी, चलिये। भोजन करेंगे। मैं नौकर से कहकर आया हूँ कि सबके भोजन का प्रबंध हो।'' कहकर रूपधर अपने पिता को घर में ले आया। वहाँ रूपधर के सुवरों का रखवाला तथा पशु-पालक रसोई बना चुके। पिपीलक जब नहा-धोकर आया तो रूपधर ने देखा कि अब भी उसके पिता दृढ़ और सीधे हैं। उनकी शारीरिक स्थिति को देखते हुए उसे आश्चर्य हुआ। फिर सबने मिलकर भोजन किया।

इस बीच रूपधर से की गयी हत्याओं का समाचार नगर भर में आग की तरह व्याप्त हो गया। अनेकों लेग हाहाकार मचाते हुए, विलाप करते हुए रूपधर के घर के पास आये। वहाँ के दृश्य को देखकर उनके हृदय भय से काँप उठे। जहाँ देखो, वहाँ लाश ही लाश पड़े हुए थे। उनमें से कोई भी जान नहीं पाया कि यह हत्याकांड कैसे हुआ और किसने किया। पद्ममुखी, धीरमति तथा उनके दास-दासियों में से किसी को भी वहाँ न पाकर उन्हें अपार आश्चर्य हुआ। अपने-

अपने लोगों के शवों को पहचाना और ले गये। किन्तु दुर्बुद्धि के पिता को संदेह हुआ। उसे लगा कि इसमें अवश्य ही रूपधर का हाथ है। उसे वहाँ कुछ ऐसे सबूत भी मिले जिनसे यह प्रमाणित हुआ कि इस हत्याकांड का मूल कारक रूपधर ही है।

दूर प्रांतों से आये लोगों ने अपने-अपने रिस्तेदारों के शवों को उन-उन देशों को नावों में भेज दिया।

बाद नगर में सभा हुई। दुर्बुद्धि के पिता ने सबको उकसाया। उसने कहा ''मित्रो, साफ़ है कि रूपधर के हाथों ही यह हत्याकांड हुआ। इस मनुष्य का किया गया हत्याकांड बहुत ही दारुण है। वह कितनी ही नावें अपने साथ ले गया। कितने ही युवकों को भी अपने साथ युद्धभूमि ले गया। नावों और युवकों का ध्वंस हो गया। उसने सब कुछ खो दिया। अकेले लौटा और देश के जितने अच्छे-अच्छे युवक हैं, उन सबको मार डाला। वह दुष्ट पैलास या एलिस भाग जाए, इसके पहले ही हमें उसे पकड़ना है। हमें बदला लेना है। प्रतिशोध की अग्नि हमें बुझानी है। हमारे पुत्रों के हत्यारों को अगर हम ख़तम नहीं कर पायें तो इससे बढ़कर कलंक हमपर और क्या होगा। मैं मरने तैयार हूँ। पर यह अपमान सह नहीं सकता। प्रतीकार के लिए सन्नद्ध हो जाइये।'' उसकी बातें सुनते हुए और उसके आँसू देखते हुए उपस्थित लोगों के दिल प्रतिशोध की ज्वाला से भड़क उठे।

ठीक उसी समय पर वहाँ एक आदमी आया। वह उन दोनों में से था, जिसे रूपधर ने मारे बिना छोड़ दिया। क्योंकि रूपधर की दृष्टि में वे दोनों नादान थे। उसने सबको संबोधित करते हुए कहा ''इथाका के नागरिको, मेरी एक बात सुनिये। जब यह

हत्याकांड हुआ, तब मैं वहाँ उपस्थित था। अपनी इन आँखों से देखा कि बुद्धिमती देवी, रूपधर के पास ही खड़ी थी। इस हत्याकांड के पीछे दैव निर्णय है। इसलिए रक्तपात का विचार छोड़ दीजिये।''

ये बातें सुनकर सबके मुख विवर्ण हो गये।

तब एक वृद्ध उठा और कहा ''जो होना था, हो गया। अब और क्यों रक्त बहाएँ। सच कहा जाए तो ग़लती तुम्हारे बेटों की है। मैं पहले भी आपसे कह चुका था कि अपने बेटों को काबू में रखो। लेकिन आपने अनसुनी कर दी। आपके बेटों का विश्वास था कि रूपधर लौटेगा ही नहीं। इसी बूते पर उन्होंने उसके घर को लूटा और उसकी पत्नी का अपमान किया। इसकी सज़ा उन्हें भुगतनी पड़ी। इसमें किसी और की कोई ग़लती नहीं हैं।''

उसकी बातों से सभा के आधे लोग तृप्त हुए और वहाँ से चले गये। शेष लोगों ने प्रतिशोध लेने का निश्चय किया। दुर्बुद्धि के पिता के नेतृत्व में हथियार लेकर निकल पड़े। पिपीलक जहाँ रहता था, वहाँ पहुँचते-पहुँचते रूपधर, उसका पिता तथा अन्य हथियारों से लैस होकर उनका सामना करने तैयार थे।

धीरमति ने अपने पिता से कहा ''पिताश्री, आज मैं इन सबको अपना प्रताप दिखाऊँगा।''

पिपीलक ने बहुत ही आनंदित होकर कहा ''ईश्वर, मेरे जीवन में यह कितना बड़ा पर्व दिन है। मेरा बेटा और पोता अपना-अपना प्रताप दिखाने उत्सुक हैं।'' स्वयं उत्साह से भरा हुआ था। उसने अपनी वर्छी उठायी और दुर्बुद्धि के पिता पर फेंकी। उसके प्रहार से वह गिर गया। रूपधर तथा औरों ने दूसरों पर वार किया। किन्तु इतने में उन्हें बुद्धिमति देवी की बातें सुनायी पड़ीं।

''इथाका के नागरिको, यह रक्तपात रोक दो।'' उसका कंठस्वर सुनते ही सब अवाक् रह गये। उनके हाथों से हथियार नीचे गिर गये। जो प्रतिशोध लेने आये, चुपचाप नगर की ओर लौटे।

बाद रूपधर को शत्रु-भय नहीं रहा। वह अपने पिता, पत्नी व पुत्र के साथ सुखी जीवन बिताने लगा।

(समाप्त)
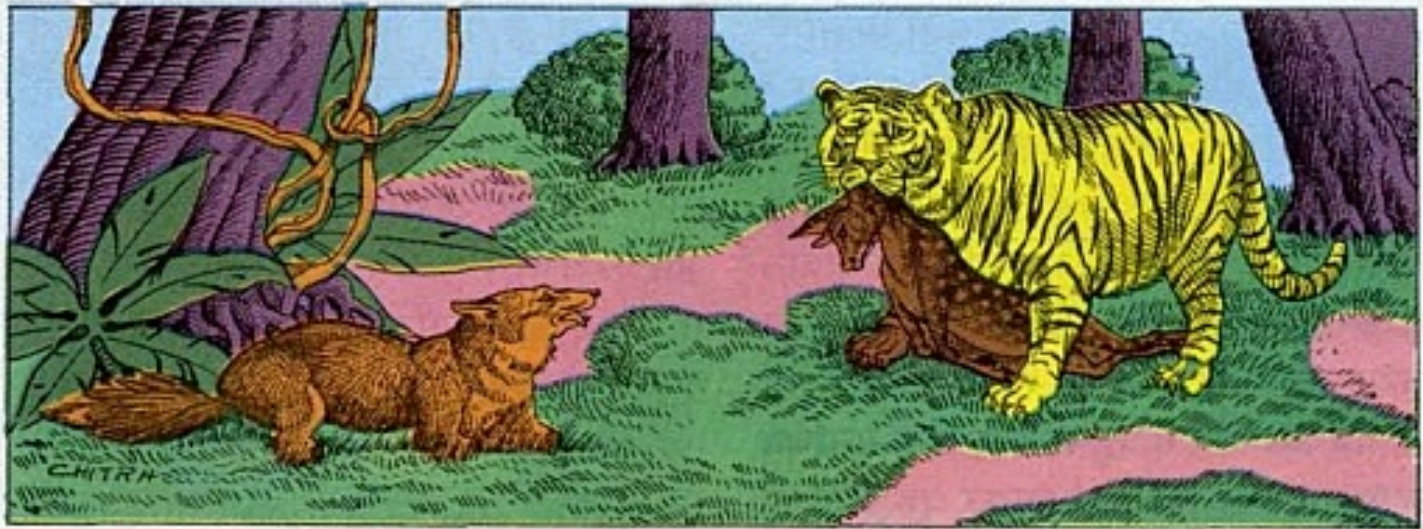
भगवान का भरोसा

बहुत पहले की बात है। पर्शिया देश के एक गाँव में एक फ़क़ीर रहा करता था। वह मूर्ख और सुस्त था। वह हट्टा-कट्टा था, उसके हाथों व पैरों में पूरी शक्ति थी, फिर भी मेहनत करके कमाने की इच्छा से वह दूर भागता था। अपना पेट भरने के लिए वह भीख माँगता था। एक अर्से के बाद उस गाँव में उसे भीख देनेवाला ही नहीं रहा। वह उस सच्चाई को जान गया कि इस गाँव में रहने से पेट भरना असंभव है। दूसरे दिन सबेरे पास ही के गाँव में जाने निकला।

बीच में उसे एक जंगल पार करना पड़ा। फ़क़ीर जब जंगल से गुज़र रहा था तो उसने एक सियार को देखा, जिसके हाथ-पाँव नहीं थे। उसे देखकर आश्चर्य हुआ और अपने आप कहने लगा ''वाह रे भगवान की सृष्टि। बिना हाथ-पाँव के यह सियार इस जंगल में कैसे रह रहा है? अपनी जिन्दगी कैसे बिता पा रहा है? अपना आहार कैसे समेट पा रहा है?'' वह जब अपने ही आप ऐसा कहता रहा तो उसने देखा कि एक बाघ ने हिरण को मार डाला और उसी तरफ़ उसे खींचता हुआ ले आया। बाघ को देखते ही फ़क़ीर एक झाड़ी के पीछे छिप गया।

बाघ अपने से जितना हो सके, खाया और हिरण के आधे मृत शरीर को वहीं छोड़कर चला गया। बाघ के खाने के बाद बचे हिरण के शरीर को सियार ने खाया और अपनी भूख मिटा ली।

फ़क़ीर को लगा कि आज उसे एक सत्य मालूम हुआ। समस्त जीवों के पोषक वह भगवान ही इस लंगड़े-लूले सियार को समय पर आवश्यक आहार पहुँचाते हैं।

''जिस प्रकार भगवान इस सियार के लिए आहार का प्रबंध करते हैं, उसी प्रकार वे मेरा खयाल क्यों नहीं रखते। उन्हें मेरी चिंता

पच्चीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

क्यों नहीं है ? जो भी हो, आगे से किसी के सामने हाथ फैलाकर भीख नहीं माँगूँगा । सियार की ही तरह मैं भी भगवान का विश्वास करूँगा और कहीं एक कोने में पड़ा रहूँगा । मुझे हर दिन जो चाहिये, भगवान ही उसका प्रबंध करेंगे'' फ़क़ीर ने यों निश्चय किया और उस गाँव की तरफ़ बढ़ा ।

वह उस गाँव में पहुँचा और सीधे मसजिद के पास गया । जब वहाँ जाकर वह खड़ा हो गया तो एक आदमी ने उसे सलाह दी 'साहब, यहाँ कोई नहीं रहते । कहीं और जाकर भीख माँगो ।'' ''घर जब मौजूद है, तब कोई न कोई प्राणी अंदर तो रहेगा ही । इसमें जो रहते हैं, क्या वे दीन-दुखियों पर तरस नहीं खाते ?'' फ़क़ीर ने पूछा । वह आदमी नाराज़ होता हुआ बोला ''जानते हो, इसमें कौन रहते हैं ? जिन्होने तुम्हें और मुझे प्राण दिया, जो सकल जीवों के पोषक हैं, वे सर्वेश्वर इसमें रहते हैं । उसका अपमान मत करो । यहाँ से जाओ ।''

''सर्वेश्वर के घर के सामने ही खड़ा हूँ और हाथ फैला रहा हूँ तो खाली हाथ लौटने का सवाल ही नहीं उठता । जो भी हो, भीख लिये बिना यहाँ से नहीं हटूँगा'' कहते हुए फ़क़ीर एक पेड़ की छाया में बैठ गया । अपनी झोली फैलाते हुए वह कहने लगा ''दीन पोषक, अपने अदृश्य भंडार से मेरे हिस्से का आहार भेजो ।'' चूँकि वह फ़क़ीर उस गाँव में नया-नया आया हुआ था, इसलिए किसी ने उसकी ख़बर ही नहीं ली ।

कुछ न खाने के कारण फ़क़ीर नीरस हो गया, शक्ति नहीं रही । उसकी मांस-पेशियाँ पिघल गयीं । अब बस चर्म व हड्डियाँ ही रहीं । उसकी अवसान दशा आसन्न हो गयी ।

उस समय मसजिद के अंदर से उसे ये बातें सुनायी पड़ीं ।

''मूर्ख, क्या तुम वह सियार हो, जिसके हाथ-पैर नहीं हैं, जो बेसहारा है । बल के होते हुए भी जूठन की आशा रखना नीचतापूर्ण कार्य है । मेहनत करके जो खुद कमाते हैं और परोपकार करते हैं. उनपर मेरी कृपा-दृष्टि सदा रहती है ।''

ये बातें सुनकर फ़क़ीर लज्जित हुआ । उसमें ज्ञानोदय हुआ । मेहनत की और आत्मनिर्भर रहा । इज़्ज़त से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने लगा ।

शिवमल्ल की कहानी

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डालकर चलता बना। वह मौन हो श्मशान की तरफ जाने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा ''राजन, आधी रात के समय जब कि अपने शयनागार में तुम्हें आराम से सोना चाहिये और सुँदर सपने देखते रहना चाहिये, श्मशान में भटक रहे हो। लगता है कि श्मशान के रखवाले हो। तुम्हारी इस स्थिति को देखते हुए लगता है कि विधि के हाथों में सब कठपुतले हैं। सहज ही पुरुष स्त्री या संपत्ति प्राप्त करने की धुन में रहता है। इस धुन के पीछे लगकर वह पागल-सा हो जाता है। मेरा यह संदेह कहीं निराधार तो नहीं कि तुम भी किसी स्त्री के प्रेम को पाने की कोशिश में रत हो। उसके हृदय पर विजय पाने के लिए इतने कष्ट झेल रहे हो। बड़ी ही सहनशक्ति और आग्रहपूर्वक अपने

बैताल कथा

कार्य में सफल होने का प्रयत्न कर रहे हो। मुझे तो लगता है कि शिवमल्ल की तरह आख़िरी क्षण में तुम अपना इरादा बदल लोगे और मूर्ख की तरह व्यवहार करोगे। किया कराया मिट्टी में मिला दोगे और अपने परिश्रम का फल किसी और को सौंपोगे। तुम्हें सावधान करने तथा उसकी मूर्खता-भरे व्यवहार से ज्ञात होने के लिए शिवमल्ल की कहानी सुनाऊँगा, जो अपनी थकावट दूर करते हुए सुनते जाओ।'' बेताल शिवमल्ल की कहानी यों कहने लगा।

प्रणवपुर का राजा था विजयसेन। वह सहृदयी तथा शासन-दक्ष था। प्रणवपुर की पश्चिमी दिशा के अरण्य प्रांत में गिरिजनों की एक बस्ती थी। युद्ध के समय में ये गिरिजन विजयसेन को सहायता पहुँचाते थे।

उन गिरिजनों के सरदार का नाम था शंभुनाथ। उसी का बेटा था शिवमल्ल। धनुर्विद्या में दक्ष था। अरण्य में बिजली की तरह तेज दौड़नेवाले बारहसिंघा या बाघ को अपने एक ही बाण से नीचे गिरा देता था।

प्रणवपुर का पड़ोसी देश कैवल्यपुरी का राजा था धीरसेन। वह विजयसेन का सामंत राजा था। एक दिन धीरसेन की बेटी युवरानी अमृता अपनी सहेलियों के साथ वनविहार करने निकली। जब उसका रथ गिरिजनों की बस्ती से गुज़र रहा था तब एक जंगली आम के पेड़ पर से अति भयंकर अजगर उसपर लपका और उसे निगलने का प्रयत्न करने लगा।

अमृता भय से कांप उठी। वह ज़ोर से चिल्लायी। रथसारथी और सहेलियाँ घबरा गये और नीचे कूद पड़े। रक्षा, रक्षा कहकर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगे।

विजयसेन उस समय वहाँ आखेट करने आया हुआ था। उन आर्तनादों को सुनकर वह घोड़े पर तेज़ी से वहाँ आया। यह दृश्य देखकर वह निश्चेष्ट रह गया। उसके और रथ के बीच का फ़ासला दो सौ गज का होगा। बाण चलाकर अजगर को मारा जा सकता है पर कहीं वह बाण उस सौंदर्य-राशि को लग जाए तो जान का ख़तरा है।

विजयसेन सोच में पड़ गया कि क्या करूँ? इतने में शिवमल्ल भी आर्तनाद सुनकर वहां दौड़ा-दौड़ा आया। आते ही उसने तरकस से बाण निकाला और अजगर के सिर को अपना निशाना बनाकर बेधा। झंकारनाद करता हुआ बाण सीधे अजगर के सिर को जा लगा

और अजगर ज़मीन पर आ गिरा। यों अमृता बच गयी। अपनी ही ओर बढ़े चले आते हुए शिवमल्ल को उसने कृतज्ञतापूर्वक देखते हुए कहा "मैं कैवल्यपुर की युवरानी अमृता हूँ। तुमने मेरी रक्षा की है। तुम न होते तो अजगर मुझे निगल जाता। तुम मेरे जीवन - दाता हो। मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ। तुम्हारी सहायता का मूल्य आँका नहीं जा सकता पर मेरी तृप्ति के लिए यह रत्नहार स्वीकार करो।" कहती हुई उसने अपने गले से हार निकाला और शिवमल्ल को दिया।

हार स्वीकर करके उसी को एकटक देखते हुए शिवमल्ल से अमृता ने कहा "जब फुरसत हो, राजधानी आना। मैं अपने पिता से तुम्हें मेरा अंगरक्षक बनाने की प्रार्थना करूँगी। इसमें तुम्हें कोई एतराज तो नहीं है ना ?" मुस्कुराती हुई उसने पूछा।

यह दृश्य देखते हुए विजयसेन का हृदय ईर्ष्या से जल उठा। राजकुमारी ने उसे देखा तक नहीं, इसका उसे बड़ा रंज हुआ।

राजधानी लौटने के बाद विजयसेन की आँखों के सामने राजकुमारी अमृता का ही रूप दिखने लगा ? वही चलती-फिरती नज़र आने लगी। उसे लगा कि उससे विवाह न करूँ तो जीवन व्यर्थ है, जीना बेकार है। उसने सोचा कि सामंत राजा की बेटी को अपने राजा से शादी करने में कोई अपत्ति नहीं होगी। अगर उसने शादी करने से इनकार किया तो इसका मतलब हे कि वह शिवमल्ल को चाहने लगी है।

यों विजयसेन सोच-विचार में पड़ गया। आगे क्या करूँ, वह निर्णय ले नहीं पा रहा था। इतने में गुप्तचर समाचार ले आये कि शिवमल्ल, अमृता का अंगरक्षक नियुक्त किया गया। विजयसेन को अब लगा कि और विलंब करने से अमृता उसके हाथ से निकल जायेगी और उससे शादी संभव हो नहीं पायेगी।

उसने अमृता के पिता को पत्र लिखते हुए अपना विचार व्यक्त किया कि मैं अमृता से विवाह रचाना चाहता हूँ। उसे संदेह हुआ कि शायद वह इस प्रस्ताव को स्वीकार न करे इसलिए उसने उस पत्र में यह भी लिखा कि स्वीकृति न देने पर कैवल्यपुर पर आक्रमण करके उसपर विजय पाऊँगा और राजकुमारी को अपनी बनाकर ही रहूँगा। उसने वह पत्र एक दूत के द्वारा धीरसेन को भेजा।

उस पत्र को पढ़कर धीरसेन की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अपने महाराज से ऐसे

प्रस्ताव की आशा ही नहीं की थी। उसने वह पत्र अपनी पुत्री को देते हुए कहा "देखो बेटी, महाराज तुमसे विवाह करना चाहते हैं। तुम्हारा भाग्य चमक उठा।"

पत्र को पढ़ने के बाद अमृता का मुखड़ा क्रोध से भर गया। थोड़ी देर तक वह मौन रही। फिर अपने को संभालकर उसने पिता से कहा "पिताश्री, यह पत्र तो अपने सामंत राजा को दी हुई चेतावनी-सी लग रही है। मुझे तो लगता नहीं कि वे मुझे चाहते हैं, मुझसे प्रेम करते हैं। ऐसे अहंभावी से विवाह करके भला मैं कैसे सुखी रह सकती हूं।" उसने स्वयं पत्र लिखा और एक दूत द्वारा विजयसेन को भेजा।

अमृता का पत्र पढ़कर विजयसेन क्रोध से तिलमिला उठा। पत्र का सारांश था - निकट भविष्य में विवाह करने का मेरा उद्देश्य नहीं है। क्षमा कीजिये। बलपूर्वक विवाह करने का विचार छोड़िये। अपनी विशाल सेना की सहायता से हमारे राज्य को जीतना आपके लिए बहुत ही आसान काम है। हमारे राज्य को जीतने मात्र का मतलब यह नहीं कि आपने मेरे हृदय को भी जीत लिया। खूब सोचिये और निर्णय लीजिये।

एक-दो बार पढ़ने के बाद विजयसेन के क्रोध का पारा उतर गया। उसका आवेश घट गया और शांत हो सोचने लगा। पारस्परिक प्रेम व अनुराग के बिना, अपने सैनिक बल से ड़रा-धमकाकर राजकुमारी से विवाह करना उसे अनुचित लगा। उसे लगा कि यह राजोचित कार्य नहीं।

धीरसेन को ड़र लगने लगा कि अपनी पुत्री का पत्र पढ़ने के बाद विज़यसेन उसके राज्य पर आक्रमण करेगा। परंतु दो-तीन महीनों के बाद भी जब ऐसा नहीं हुआ तो उसने सोचा कि शायद किसी और युवती से विजयसेन शादी करना चाहता होगा।

अमृता ने अपने पिता से कहा "मेरा अनुमान सही निकला पिताश्री। मेरा अनुमान था कि मेरे पत्र को पढ़ने के बाद विजयसेन युद्ध का विचार त्यजेंगे और मुझे अधिकाधिक चाहेंगे, उनका प्रेम और घना होता जायेगा। जैसा मैंने सोचा वैसा ही हुआ।"

कुछ दिनों के बाद जब अमृता उद्यानवन में टहल रही थी, तब उसने देखा कि शिवमल्ल उद्यानवन के द्वार पर खड़ा हुआ है। वह वहां इधर-उधर टहलती रही और सूखे पत्तों के नीचे लेटे हुए सर्प पर पाँव रखा। सर्प ने

फ़ौरन उसे डस लिया।

आर्तनाद करती हुई अमृता भूमि पर अचेत गिर पड़ी। शिवमल्ल बिजली की तरह दौड़ता हुआ वहां आया और फूलों के पौधों में घुसते हुए रक्त वर्ण के उस सर्प को तलवार से मार डाला।

समाचार पाकर राजा, रानी वहाँ आये। शिवमल्ल तब तक राजवैद्य को बुलाकर ले आया। मरे हुए सर्प को देखकर राजवैद्य स्तंभित हो गया। उसने उस पाँव पर पत्तों का रस घोला और धीरसेन से कहा "महाराज, राजकुमारी थोड़े ही क्षणों में होश में आ जाएगी। किन्तु विष के प्रभाव के कारण वह शाश्वत रूप से अंधी हो जायेगी। उसको डसनेवाला सर्प कोई साधारण सर्प नहीं है। रक्तबीज नामक महासर्प है। मैंने सुना है कि यहाँ से पूरबी दिशा में जो रक्तपिपासी पर्वत है, वही इन सर्पों का निवास-स्थल है। ऐसे विषैले सर्पों का हमारे उद्यानवन में आना राजकुमारी का दुर्भाग्य है।"

होश में आयी अमृता ने अपनी आँखों को मलते हुए कहा "शिवमल्ल, मुझे कुछ दिखायी नहीं देता। मैं अंधी हो गयी।" गद्‌गद्‌ कंठ से उसने कहा।

शिवमल्ल को कुछ सूझा नहीं। वह दोषी की तरह खड़ा रहा। रानी पुत्री को गोद में लेकर रोने लगी। राजा ने अपने दुख पर काबू पाते हुए कहा 'वैद्यवर, क्या कोई ऐसा उपाय नहीं, जिससे राजकुमारी को फिर से दिखायी पड़े ?"

राजवैद्य ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा "रक्तबीज ले सर्प ने डसे जानेवाले को

फिर से दृष्टि प्राप्त होनी हो तो इसके लिए आयुर्वेद ग्रंथों में एक मार्ग बताया गया है। सर्पगंध के पुष्प को उसकी आँखों पर रखना होगा।"

बड़ी ही आतुरता से राजा ने कहा "फिर देरी क्यों ? यह काम जन्दी कीजियेगा।"

राजवैद्य ने लंबी साँस खींचकर कहा "महाराज, पहले ही मैं कह चुका हूँ। कोई साहस करे और रक्तपिपासी पर्वतों के बीच काली आलय के आसपास जो सर्पगंध वृक्ष है, उससे फूल तोड़ लाये तो यह संभव है। मेरे बचपन में मेरे दादा नें मुझसे यह बताया था। कहा जाता है कि उस वृक्ष में पचास सालों में एक ही बार यह पुष्प खिलता है। चिकित्सा के लिए एक ही बार उसका उपयोग किया जा सकता है। सौ फुट तक पनपनेवाले

उस वृक्ष के चारों ओर रक्तबीज सर्प विचरते रहते हैं। उनसे बचकर उस पुष्प को तोड़ ले आना असाध्य कार्य है।''

थोड़ी देर सोचने के बाद राजा ने घोषणा की ''उस पुष्प को तोड़ ले आनेवाले महावीर से अपनी पुत्री का विवाह कराऊँगा।'' यह घोषणा राज्य भर में सुनायी गयी।

शिवमल्ल ने हिचकिचाये बिना तुरंत कहा ''महाराज, उस पुष्प को ले आने का प्रयत्न करूँगा। मुझे आशीर्वाद दीजिये।''

''तुम्हारी जय हो'' राजा ने उसे आशीर्वाद दिया। शिवमल्ल ने अश्वशाला से एक उत्तम घोड़े को चुना। वह उसपर बैठकर वायुवेग से रक्तपिपासी पर्वत की ओर बढ़ा।

यह समाचार दूसरे दिन सबेरे प्रणवपुर के राजा विजयसेन को गुप्तचरों के द्वारा मालूम हुआ। विजयसेन भी अविलंब सर्पगंध पुष्प को पाने निकल पड़ा।

शिवमल्ल रातों के समय ही किसी पेड़ के नीचे सोता रहा। सप्ताह भर वह यात्रा करता रहा और आख़िर काली के शिथिल आलय के पास पहुँचा और वहाँ सर्पगंध वृक्ष को देखा।

आकाश को छूते हुए उस वृक्ष के चारों ओर रक्तबीज सर्प घूम रहे थे। शिवमल्ल को लगा कि उनसे बचकर वृक्ष के निकट जा पाना असंभव है। उस वृक्ष में न ही पत्ते अधिक थे, न ही शाखाएँ अधिक थीं। उस पेड़ के अग्र भाग में आकाश के नक्षत्र की तरह एक पुष्प अरुण रंग में चमक रहा था।

शिवमल्ल पलक मारे बिना थोड़ी देर तक उस पुष्प को देखता रहा। फिर उसने धनुष पर बाण चढ़ाया और उस पुष्प को अपना निशाना बनाया। बाण पुष्प से जा लगा और वह हवा में उड़ता हुआ नीचे आ गिरा। विषसर्प उसके चारों ओर घिर आये। शिवमल्ल की समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या करूँ। पुष्प की तरफ वह देखता रह गया।

इतने में उसने किसी घोड़े के टापों की आवाज़ सुनी। घोड़े पर आसीन विजयसेन थोड़ी देर में वहाँ आया। घोड़े से बिना उतरे ही सर्पों के बीच में पड़े पुष्प को उसने देखा और कहा ''अच्छा, मुझसे पहले ही आकर तुमने पुष्प को नीचे गिराया।''

''मेरा अनुमान था कि आप यहाँ अवश्य आयेंगे। महाराज, आप पुष्प के पास न जाइये। खतरा है।'' कहकर शिवमल्ल लपका और पुष्पगंध को छुआ भी नहीं, सर्पों ने उसके हाथ को डस लिया। शिवमल्ल

लड़खड़ाता हुआ आया। उस पुष्प को विजयसेन के हाथों में देते हुए कहा "महाराज, राजकुमारी को शाश्वत रूप से अंधी होने से बचाइये। उनसे विवाह करके सुखी रहिये।" विष के प्रभाव के कारण वह बेहोश हो गया। किन्तु थोड़ी देर में उसे होश आया, पर अंधा हो गया।

राजा विजयसेन ने शिवमल्ल को आलिंगन में लिया और कहा "शिवमल्ल, तुम्हारा त्याग अतुलनीय है, अद्भुत है। तुम्हें ग़लत समझा, इसके लिए मुझे क्षमा करो। मेरे आस्थान में आयुर्वेद के ही नहीं, बल्कि अनेकों वैद्य-शास्त्रों की जानकारी रखनेवाले कितने ही वैद्य हैं। यह न समझना कि रक्तबीज के सर्पों की काट की चिकित्सा का यह पुष्प मात्र ही एकमात्र चिकित्सा है।"

शिवमल्ल को घोड़े पर चढ़ाकर विजयसेन राजधानी की ओर निकला।

बेताल ने राजा विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और अपने संदेह व्यक्त करते हुए पूछा "राजन्, इसमें कोई संदह नहीं कि शिवमल्ल का व्यवहार असहज और अस्तव्यस्त है। वह अंगरक्षक बना, इसी उद्देश्य से कि किसी दिन अमृता से विवाह करूँ। जब कि उसने पुष्प पाया तो उसे चाहिये था कि अपनी असाधारण सफलता के उपलक्ष्य में अमृता को अपनी धर्मपत्नी बनाये, जिसके लिए उसे अंधा भी बनना पड़ा। फिर भी उसने विजयसेन को यह पुष्प दिया। यह उसकी मूर्खता की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है ? मेरी समझ में नहीं आता कि जब तक विजयसेन वहाँ नहीं पहुँचा तब तक उसने पुष्प को पाने का प्रयत्न क्यों नहीं किया ? विजयसेन के पुष्प पाने के प्रयत्न को रोकना क्या उसकी संकीर्ण मानसिकता का द्योतक नहीं ? ऐसे मनुष्य को विजयसेन ने त्यागधनी कहकर उसकी प्रशंसा की। क्या यह अजीब नहीं लगता।

अब रही विजयसेन की बात। पहले तो वह जबरदस्ती ही सही राजकुमारी से शादी करने पर तुल गया था। पर पत्र पढ़ने के बाद उसने अपना विचार बदल लिया। यह विचार-परिवर्तन भी बड़ा विचित्र लग रहा है। क्या इससे यह पता नहीं चलता कि राजकुमारी के प्रति उसका प्रेम मात्रा में घट गया। अगर यह सच है तो सर्पगंध पुष्प को पाने की कोशिश उसने क्यों की ? क्या कह सकते हैं कि शिवमल्ल के प्रति उसमें जो ईर्ष्या घर कर गयी है, यही उसका कारण है ? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

विक्रमार्क ने कहा ''यह समझना अर्थ रहित है कि शिवमल्ल राजकुमारी से विवाह करने के लिए ही अंगरक्षक बना। उसी की तरह अमृता ने भी शिवमल्ल से प्यार नहीं किया। धनुष चलाने के उसके नैपुण्य मात्र को देखकर उसे वह अच्छा लगा। वह आत्माभिमानी युवती थी, इसी कारण राज-दर्प दिखाकर उससे विवाह करने की इच्छा रखनेवाले विजयसेन के पत्र का उसने उत्तर दिया और उसकी आँखें खोलीं। वह भी अमृता के लिए पुष्प पाने निकला, यह इस बात का प्रमाण है कि अमृता के प्रति उसका प्रेम जैसे के तैसे बना रहा। उसमें कोई ढिलाई नहीं आयी।

पुष्प को गिराने के बाद शिवमल्ल जान गया कि सर्पों के बीच पड़े पुष्प को ले आना असंभव है। वह तो मृत्यु को आह्वान देना है। अगर पुष्प को लेने के प्रयत्न में स्वयं अंधा हो जाए तो कौन अमृता को पुष्प देगा ? यह सत्य जानकर ही वह तब तक चुप रहा जब तक विजयसेन वहाँ नहीं पहुँचा। इसी कारण पुष्प लेने का प्रयत्न उसने नहीं किया। वह नहीं चाहता था कि विजयसेन विषसर्पों का शिकार बने, इसीलिए उसने उसे जाने से मना किया। अपने कर्तव्य को निभाने में दृढ़संकल्प शिवमल्ल की प्रशंसा विजयसेन ने मुक्तकंठ से की। उसने उसके त्याग-भावना की वाहवाही की। उसे ग़लत समझने पर अपना पछतावा व्यक्त किया और उसे अपने साथ ले गया।''

यों राजा का मौन-भंग करने में सफल बेताल शव सहित गायब होकर पेड़ पर जा बैठा।

आधार - प्रफुल्लचंद्र की रचना

वापस मुख्यभूमि पर

शब्द : मीरा नायर ◆ चित्र : गोपकुमार

प्रवाल-द्वीपों के समूह लक्षद्वीप से विदा हो कर हम अब वापस मुख्यभूमि पर पद्मनाभपुरम् पहुंचते हैं, जो तिरुवनंतपुरम् से लगभग ५५ कि.मी. दक्षिण में है.

अब तो यह शहर तमिलनाडु का हिस्सा है; किंतु १६ वीं से १८ वीं सदी तक यह ट्रावंकोर (तिरुवितांकुर) की राजधानी थी. इस सदी के पूर्वार्ध तक ट्रावंकोर के राजा पद्मनाभपुरम् के प्रासाद में ही रहा करते थे. यह महल पद्मनाभपुरम् किले के बीचोबीच है और पश्चिमी समुद्रतट की प्रसिद्ध काष्ठ-वास्तुकला का अतिसुंदर नमूना है.

महल की दीवारें ऐसे कोण पर बनायी गयी हैं कि सूर्य की सीधी किरणें और गरमी महल में न पहुंचें. महल का चमकीला काला फर्श काले संगमरमर का प्रतीत होता है, लेकिन है नारियल के जले हुए खपड़ों और अंडे की सफेदी के मिश्रण से बना हुआ. राजा का पलंग पुर्तगालियों से भेंट में मिली ६३ क़िस्म की औषधीय लकड़ियों से निर्मित है. रानी के पलंग में हाथीदांत की सुंदर पच्चीकारी की गयी है.

महल के एक खंभे के ऊपर लोहे की एक गेंद रखी हुई है. पुराने जमाने में सेना में भरती होने के लिए आनेवाले जवानों की ताकत की परीक्षा इस गेंद से की जाती थी. जो उसे उठा ले, सिर्फ उसी को भरती किया जाता था.

पद्मनाभपुरम् प्रासाद का प्रवेशद्वार

देवी कन्या कुमारी

पद्मनाभपुरम् से १६ कि.मी. दक्षिण में है शुचींद्रम् का मंदिर, जिसमें ३० देवी-देवताओं की देवकुलिकाएं हैं. कहा जाता है कि यहां पर अपने पाप का प्रायश्चित्त करने देवराज इंद्र ने खौलते हुए घी में हाथ डुबाया था. अभी कुछ दशक पहले तक यहां संदिग्ध अपराधी खौलते घी में अपना हाथ डुबा कर परीक्षा दिया करते थे. परीक्षा से पहले उन्हें उपवास भी रखना पड़ता था. यह परीक्षा देने के तीन दिन बाद तक जिसके हाथ पर फफोले न निकलें उसे निर्दोष घोषित किया जाता था.

मंदिर के गोपुर के सामने खोखले तनेवाला एक पेड़ है, जो २,५०० साल पुराना बताया जाता है. उसके खोखले में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की मूर्तियां लिंग के रूप में स्थापित हैं.

मंदिर के अहाते में हनुमान की एक विशाल मूर्ति है. प्रतिदिन गंगाजल और गुलाबजल के मिश्रण से उसका अभिषेक किया जाता है. फिर वह जल चरणामृत के रूप में भक्तों को वितरित किया जाता है.

मंदिर के उत्तरी बरामदे में पत्थर के चार खंभे हैं, जो ग्रैनाइट की एक ही चट्टान को काट कर बनाये गये हैं. इन खंभों में बेलनाकार छड़ हैं. इन्हें टकोरने पर संगीतमय सुर निकलते हैं. कुछ छड़ों से जलतरंग जैसी ध्वनि निकलती है, कुछ से तानपूरे जैसी, कुछ से मृदंग जैसी और कुछ से वीणा जैसी.

देश के सबसे दक्षिणी छोर पर, जहां अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर आपस में मिलते हैं, वहां पर कन्या कुमारी का

सुविख्यात पवित्र मंदिर स्थित है.

बताया जाता है कि शुचींद्रम् मंदिर के भगवान शिव को रूपवती देवी कन्या कुमारी से प्यार हो गया और उन्होंने देवी से विवाह करने की अपनी इच्छा देवताओं को बतायी. देवताओं को डर लगा कि यदि देवी ने विवाह कर लिया तो शायद वे अपनी दिव्य शक्तियां खो बैठेंगी. सो उन्होंने यह विवाह रोकने में नारदमुनि से सहायता मांगी.

नारद ने दूल्हे को बताया कि विवाह का शुभ मुहूर्त सूर्योदय से ठीक पहले है. फिर नारद ने मुर्गे का रूप धारण कर लिया और दूल्हे की बरात दुल्हन के घर पहुंच सके इससे कुछ पहले जोर से बांग दी. दूल्हे ने समझा कि विवाह का शुभ मुहूर्त तो निकल गया और वह बरात समेत शुचींद्रम् लौट गया.

देवी कन्या कुमारी को तब बहुत गुस्सा आया और उन्होंने प्रीतिभोज के लिए बना सारा भोजन समुद्रतट पर फिंकवा दिया, जोकि शंखों, सीपियों और रंगीन रेत में बदल गया.

कन्या कुमारी के समुद्रतट पर लाल, भूरी, पीली, रुपहली, नारंगी, गहरी नीली और किरमिजी रंग की रेत मिलती है. इसमें मोनाज़ाइट है. इस रेत से युरेनियम निकाला जाता है, जिसका उपयोग परमाणु-बिजली के उत्पादन में होता है.

कन्या कुमारी के दर्शनीय स्थानों में से एक है गांधी मंडपम्. गांधीजी की भस्मी वहां पर रखी गयी थी.

मंडप एक सादा भवन है. समुद्र में विसर्जन से पहले ठीक जिस स्थान पर गांधीजी की भस्मी रखी गयी थी, वहां पर काले संगमरमर का एक फलक जड़ा हुआ है.
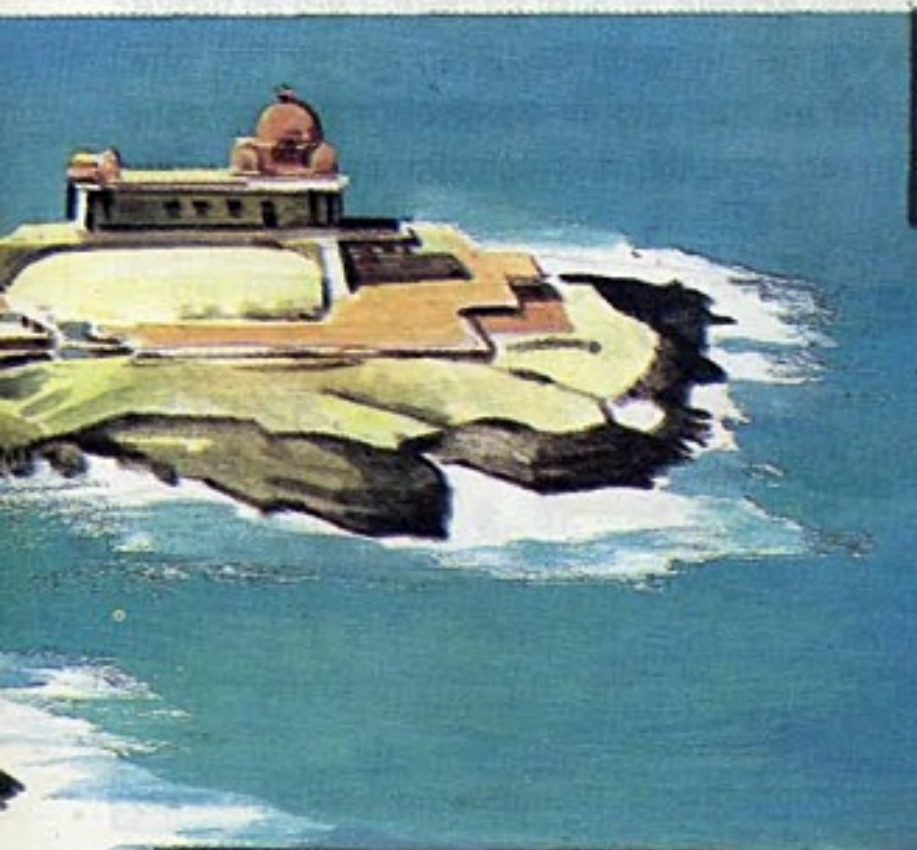
प्रतिवर्ष २ अक्तूबर को गांधी जयंती के दिन, कक्ष में बने एक सूराख से सूर्य की किरणें इस शिला-पलक पर गिर कर इसे आलोकित करती हैं. इस मार्मिक दृश्य को देखने सैकड़ों लोग उस दिन यहां आते हैं.

गांधी मंडपम्

तट से आधे कि.मी. दूर समुद्र में एक चट्टान सिर उठाये खड़ी है. मान्यता है कि देवी कन्या कुमारी ने यहां पर भगवान शिव की प्रार्थना की थी. महान संन्यासी और धर्म-सुधारक स्वामी विवेकानंद ने दिसंबर १८९२ में यहां तीन दिन तीन रात ध्यान लगाया था. विवेकानंद शिला स्मारक ट्रस्ट ने यहां पर विवेकानंद केंद्र का निर्माण करवाया, जिसका उद्घाटन १९७० में हुआ.

इस चट्टान के पास ही एक और चट्टान है. इस पर तिरुक्कुरल् के रचयिता संत तिरुवळ्ळुवर् की तीन मीटर ऊंची प्रतिमा स्थापित की जानेवाली है. नीति और सदाचार की शिक्षा देनेवाले ग्रंथ 'तिरुक्कुरल्' को 'तमिल वेद' कहा जाता है.

कन्या कुमारी से कुछ ही दूर है मारुतमलै पहाड़ी. उस पर जड़ी-बूटियां बहुतायत से उगती हैं और आयुर्वेदिक दवाएं बनाने में काम में लायी जाती हैं.

स्थानीय पुराण के अनुसार, जब रावण ने विषैला बाण मार कर लक्ष्मण को अधमरा कर दिया, तब हनुमान को हिमालय के औषधि पर्वत से संजीवनी बूटी लाने की आज्ञा हुई. हनुमान बूटी को पहचान नहीं पाये और पूरा पहाड़ ही उठा कर वापस उड़ चले. पहाड़ का एक हिस्सा टूट कर गिरा और मारुतमलै बन गया. उस पर एक शिवलिंग है. माना जाता है कि स्वयं हनुमानजी ने उसकी प्रतिष्ठा की थी.

वरपुत्र-पुत्री

कामशास्त्री नामक पुरोहित कामनगर का निवासी था। उसकी दो बेटियाँ थीं। वह सदा इस बात पर दुखी रहता था कि उसका कोई बेटा नहीं है।

एक बार कोदाड नामक गाँव से लघु शास्त्री नामक एक पुरोहित उस गाँव के किसी घर में विवाह कराने आया। वह कामशास्त्री के घर पर ही ठहरा। कामशास्त्री ने उससे यह कहते हुए अपना दुख प्रकट किया कि मेरा कोई बेटा नहीं है।

तब लघुशास्त्री ने कहा "हमारे गाँव में मालविका के नाम से एक ग्रामदेवी है। उत्सव के समय घट को सिर पर रखकर मंदिर के सामने ही आयोजित अग्निकुंड पर से होते हुए, जो संतान चाहते हैं, वह उन्हें मिलती है। इसके लिए पहले वहाँ के पुजारी से अनुमति लेनी होगी। किसी भी जाति का आदमी अनुमति पा सकता है बशर्ते कि वह सच्चा भक्त हो। गोकुलाष्टमी के दसवें दिन हमारे गाँव में यह उत्सव मनाया जाता है। मेरी भी पहले दो लड़कियाँ हुईं तो मैं भी पुत्र के लिए अग्निकुंड से गुज़रा। तब जाकर मेरा लड़का हुआ।"

लघुशास्त्री के कहने के बाद कामशास्त्री ने भी निर्णय किया कि मैं भी कोदाड जाऊँगा और अग्निकुंड पर से गुज़रूँगा। बस, बेटा हो जाए तो नरक दंड से बच जाऊँ।

कुछ हफ़्तों के बाद गोकुलाष्टमी के दिन उसने कृष्ण की पूजा की और कोदाड गाँव निकल पड़ा। अंधेरा छाते-छाते वह कोदाड गाँव के सरहदी गाँव चित्रा में पहुँचा। उस समय आकाश में बादल छाये हुए थे। इसलिए कामशास्त्री ने सोचा, रात को इसी गाँव में ठहर जाऊँ। उसने अपने को पुरोहित बताया तो गाँव का एक आदमी उसे गाँव के पुरोहित के घर ले गया।

आनंदी वात्सायन

चित्रा गाँव के पुरोहित ने कामशास्त्री का आदर-भाव से स्वागत किया। कामशास्त्री ने जब कहा कि मैं कोदाड के उत्सव में भाग लेने जा रहा हूँ और अग्निकुंड पर चलनेवाला हूँ तो आश्चर्य प्रकट करते हुए उसने कहा ''महोदय, वेद-पंडित होते हुए भी हम अज्ञान से भरे हैं। आपकी दो बेटियाँ है। भगवान का आशीर्वाद रहा तो अग्निकुंड पर चलने के कारण आपका पुत्र हुआ तो अच्छा ही होगा। अगर पुत्र के बदले पुत्री हुई तो आपके कष्ट और बढ़ जाएँगे। तीनों का विवाह कराना आपके लिए कठिन हो जायेगा। आपकी आमदनी पर्याप्त नहीं होगी।''

''जिसने जन्म दिया, वही पार भी लगायेगा। सब भगवान के हाथ में है। मृत्यु के बाद पितृलोक में सुखपूर्वक रहने के लिए छोटा-सा एक पिंड दान करनेवाला एक पुत्र पैदा हो जाए तो वही सब कुछ है'' कामशास्त्री ने अपने मन की इच्छा प्रकट की। चित्रा का पुरोहित हँसकर चुप रह गया। इतने में भोजन के लिए आने के लिए बुलावा आया। दोनों बैठे। पुरोहित की पुत्री रमादेवी परोस रही थी। कामशास्त्री ने पुरोहित से पूछा कि आपके कितने बच्चे हैं ?

रमादेवी ने दख़ल देते हुए कहा ''महोदय, मैं अपने पिता की इकलौती पुत्री हूँ। मेरा एक बड़ा भाई था। मेरे पिता की आशा थी कि नरक से बचने के लिए एक पुत्र को जन्म दूँ। इसके लिए वे अग्निकुंड पर चले। उनका पुत्र भी हुआ। किन्तु बीस वर्ष समाप्त होते-होते वह मृत्युलोक पहुँच गया। मेरे भाई के मरने की चिंता के कारण मेरी माँ का भी देहांत हो गया। पौरोहित्य को छोड़कर मेरे पिताजी को जीने का कोई और आधार नहीं। एक युवक को पौरोहित्य की शिक्षा दी और उससे मेरा विवाह करवाया। पुत्र न होने से जो नरक प्राप्त होगा, उससे बचने के लिए अब इनका एक आधार मात्र है, जो इनका दामाद भी है और पुत्र भी।''

इन बातों को सुनकर कामशास्त्री ने उनके प्रति अपनी सहानुभूति जतायी। वह चाहता था कि भोजन खिलानेवालों से ऐसी बात करूँ, जिनसे वे संतृप्त हों। उसने रमादेवी से कहा ''पुत्री, शास्त्र कहते हैं कि भोजन करते समय मौन रहें। फिर भी अब मैं कुछ कहना चाहता हूँ। लड़की हो या लड़का, दोनों सृष्टि में समान हैं। उनकी बुद्धि भी समान होती है। जिस गायत्री की हम पूजा करते हैं, वह

स्त्री है। हमारी विद्या का मूल सरस्वती भी स्त्री ही है। संपदा की देवी भी स्त्री ही है। इस सत्य को हमें भुलाना नहीं चाहिये। पीढ़ियों से चले आते हुए अंधविश्वास के हम बंदी बन गये हैं। लड़कें के लिए हम हर प्रकार का प्रयास कर रहे हैं। लड़की को भी ऐसी ही शिक्षा दिलायी जा सकती है, जो लड़के को दिलायी जाती है। अग्निकुंड पर से चलने के बाद भी अगर मैं लड़की का ही बाप हुआ तो उसे लड़के की तरह पालूंगा-पोसूँगा और यह प्रमाणित करूँगा कि लड़की किसी भी विषय में लड़के से कम नहीं है। परब्रह्म स्वरूप इस अन्न को साक्षी बनाकर यह शपथ ले रहा हूं।''

''अवश्य ही आपका लड़का होगा। मेरी हृदयपूर्वक इच्छा और आशा है कि वह दिन आये जब कि लड़की भी लड़के के समान बने और लड़कों की कमी महसूस न कराये। जिस दिन लोक इस सत्य का विश्वास करेगा, वह दिन कितना अच्छा होगा'' रमादेवी ने आवेश-पूरित स्वर में कहा।

दूसरे दिन सबेरे ही कामशास्त्री कोदाड गाँव गया। लघुशात्री के सहयोग से पुजारी से मिला और आग पर चलकर गाँव लौटा।

आग पर चलने के एक साल के बाद कामशास्त्री का एकसाथ लड़का भी हुआ और लड़की भी हुई। जुड़वें भाई-बहन के नाम से वे गाँव में प्रख्यात भी हुए। ये जुड़वें भाई-बहन रूप में ही नहीं, आदतों में भी एक ही प्रकार के थे। इस विचित्रता ने लोगों को आश्चर्य में डाल दिया।

चित्रा गाँव में भोजन के समय की गयी

अपनी बातों को याद करके कामशास्त्री ने मालविका देवी को प्रणाम करते हुए कहा ''माते, पुत्र के साथ-साथ पुत्र का भी दान दिया। जिस प्रकार पुत्र को पालूँगा-पोसूँगा, उसी प्रकार पुत्री को भी पालूँगा-पोसूँगा। लड़के और लड़की को एक समान शिक्षा दूँगा।'' उनका नाम रखा शिव-रमा।

बहुतों ने विरोध किया किन्तु कामशास्त्री ने दोनों को समान रूप से पढ़ाया-लिखाया। शिव, रमा दोनों एक से बढ़कर एक शास्त्रों में पंडित हुए। हो सकता है, उनके जन्म का फल हो, कामशास्त्री का भाग्य पलटा। वह धनी हुआ। ज़मींदार के आस्थान के पुरोहित के लड़के से अपनी बेटी का विवाह किया। इससे उसकी स्थिति में कायापलट हो गयी। दूसरी बेटी की शादी भी बिना किसी विशेष

प्रयास के हो गयी। अब शिव,रमा युवक-युवती हैं। कामशास्त्री चाहता था कि उनका भी विवाह अच्छे घराने में हो।

शिव, रमा अपने पांडित्य से जनता को आकर्षित करने लगे। अपनी आशु कविताओं तथा वाक्-चातुर्य से सबकी प्रशंसा पाने लगे। ज़मींदार को भी इनकी विद्वत्ता तथा पांडित्य के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने उन दोनों को अपनी सभा में बुलाया। किन्तु आस्थान के संस्कृत विद्वान को उनका वहाँ बुलाया जाना अच्छा नहीं लगा। ज़मींदार के आस्थान के एक संस्कृत कवि ने ज़मींदार से कहा "प्रभु, अगर सचमुच ही ये पंडित हों तो आप इनका सम्मान कर सकते हैं। संस्कृत में इनका कहाँ तक पाँडित्य है, इसकी परीक्षा लेने का अवकाश मुझे दीजिये। मारा, नर, पूरा, जारा, परा, हारा पदों से सम्मिलित एक पद्य सुनाने के लिए कहिये। 'दुत्संगात महातां किं भवति', बुरे लोगों की संगति से हम जैसे महाकवियों की क्या भलाई होगी।" गर्व-भरे स्वर में उसने कहा।

रमा-शिव ने कहा "हम आपकी बराबरी के नहीं हैं। वर की महिमा से जन्मे हम दोनों यह प्रमाणित करने के लिए कविता सुना रहे हैं कि स्त्री-पुरुष समान शक्तिशाली हैं। हमारा इरादा किसी को पराजित करने का नहीं है। आपको प्रणाम करके इतना ही कहना चाहते हैं कि 'मानपूजापहारा',

संस्कृत कवि ने सिर झुकाकर ज़मींदार से कहा "मान का अर्थ है आदर, पूजा का अर्थ है सत्कार। अपहारा का अर्थ है-तप। बुरे लोगों की संगति के कारण महाकवियों का आदर, पूजा, सत्कार, लुप्त हो जाते हैं। मैंने जिन मादा, नर, पूरा, जारा, परा, हारा शब्दों को बताया, उनके प्रथम अक्षरों को मिलाकर इन्होंने माना पूजापहारा कहकर संस्कृत में समाधान दिया। तद्वारा इन्होंने बताया कि आदर, पूजा, सत्कार हममें से किनका हो, सोच लीजिये। ये युवक-युवती सचमुच ही महाकवि हैं।"

ज़मींदार ने बहुत ही आनंदित होकर शिव-रमा का स्वागत-सत्कार किया और उन्हें अपने आस्थान में उच्च स्थान दिया।

सुवर्ण रेखाएँ

८

(१) यह राजस्थान के अद्‌भुत जैन मंदिरों में से एक है। इसका निर्माण १४३९ में हुआ। इसमें १४४ स्तंभों के आधार पर २९ मंडप हैं। किन्तु इतने स्तंभों में से कोई दो स्तंभ एक की तरह दूसरा नहीं है। बता सकते हैं कि उस मंदिर का नाम क्या है और वह कहाँ निर्मित हुआ ?
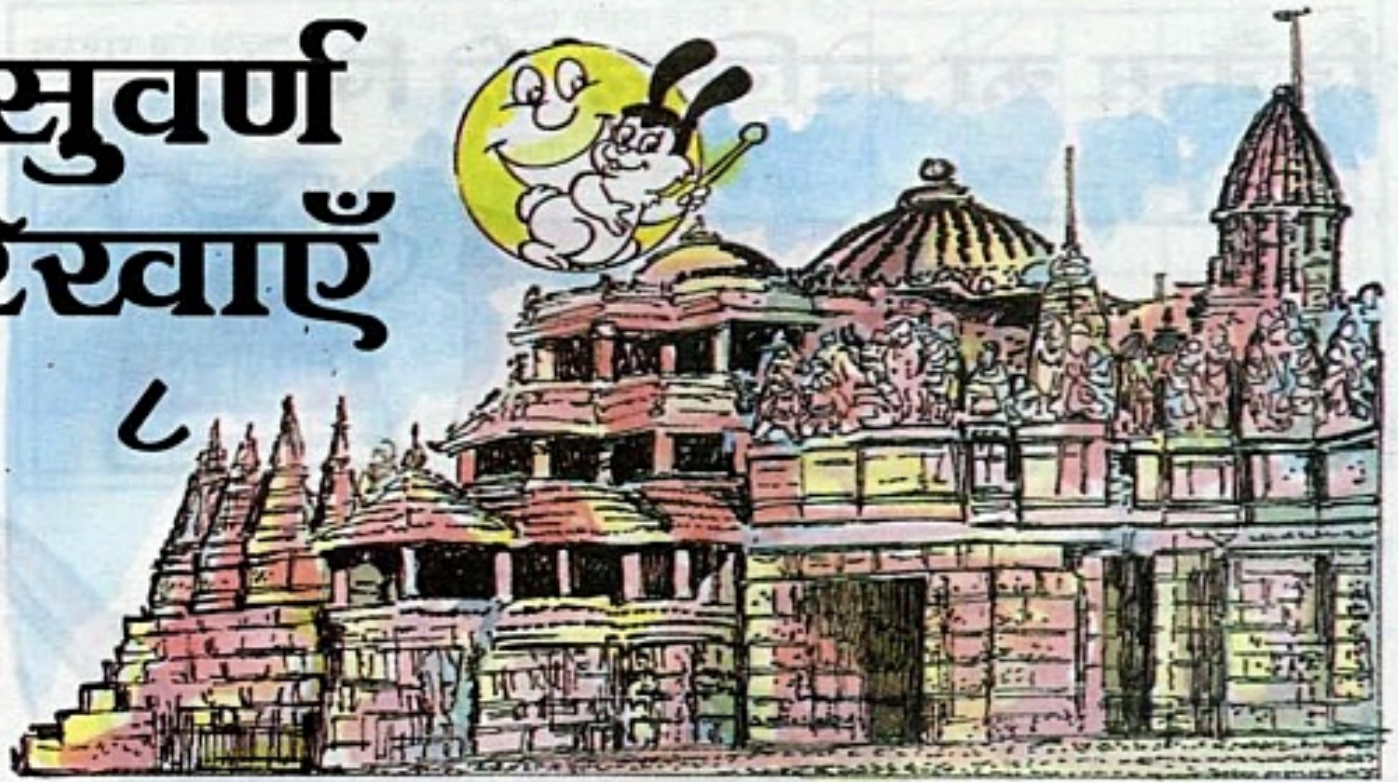
(२) यह पवित्र शिवालय समुद्री सतह से लगभग १३,००० फुटों की ऊँचाई पर बरफ से भरे पर्वतों के बीच है। यहाँ शिवलिंग बरफ़ से आयोजित हुआ है। चंद्र के बढते शुक्लपक्ष में यह शिवलिंग भी बढ़ता है। चंद्र के घटते कृष्णपक्ष में यह घटता है। क्या जानते हैं, यह शिवलिंग कहाँ है ?

(३) बायी तरफ जो लिपि है, उसका उपयोग सिंधु नागरिकता के समय किया गया। इस लिपि का क्या अर्थ है, अब तक मालूम नहीं हो पाया। दायीं तरफ की लिपि में और सिंधु नागरिकता के समय की लिपि में समीप का साम्य है। इस लिपि का उपयोग किसने किया ?

डिजैन्स का स्टेन्सिल कीजिये

कागज, कपड़ा, टीशर्ट, कुशन कवर आदि पर अपनी मनपसंद डिजैनें स्टेन्सिल कर सकते हैं। यह यों सुगम है।

१.मोटा कागज़ नहीं तो प्लास्टिक शीट लीजिये। उनपर आपको जो डिजैनें या जो आकार चाहिये, ट्रेस कर सकते हैं। इसके लिए सरल व बड़े डिजैनों को चुनना अच्छा है।

२. बाद में उन डिजैनों को सावधानी से कतरिये। अब आपका स्टेन्सिल तैयार है।

३. रंगों का मिश्रण कीजिये। याद रहे कि वह चिकना हो। कतरे गये डिजैनों को सफ़ेद या रंगीन ड्रायिंग पेपर पर रखिये। उसे ऐसा रखिये, जिससे वह न हिले-डुले। फिर उसपर रंग डालिये। इसके लिए दृढ़ ब्रष का या कपास के ऊन्का न उपयोग कर सकतें हैं।
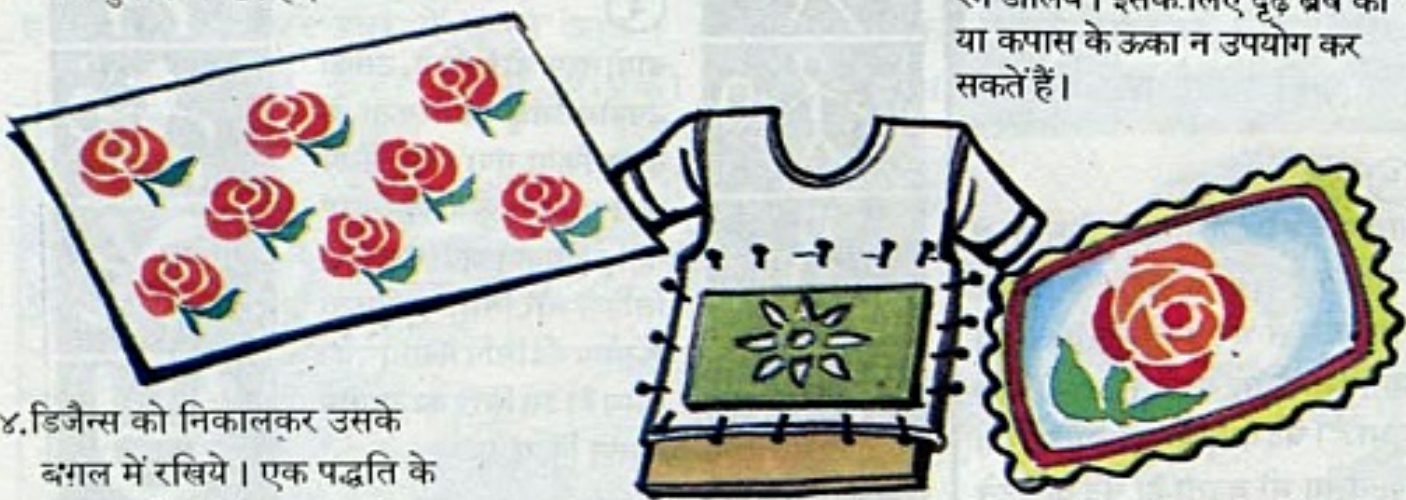
४.डिजैन्स को निकालकर उसके बगल में रखिये। एक पद्धति के अनुसार निर्धारित आकार के आते तक, पहले जैसे किया, वैसे ही बार-बार पैंट कीजिये।

५. कपड़ों पर तथा जेर्सी वस्तुओं पर स्टेन्सिल करने के लिए, कपड़ों के लिए इस्तेमाल में लाये जानेवाले फ्याब्रिक पैंट का उपयोग कीजिये। कपड़े को समतल रखना बहुत ज़रूरी है। इसलिए इसे एक कार्डबोर्ड पर पिन कर लेना अच्छा होगा।

तस्वीर को बड़ा कीजिये
छोटी तस्वीर को बड़ी बनाना चाहते हैं ? कैसे करना है, यह पद्धति यहाँ देखिये।
१. लकीरें खींचने के लिए उपयोग में लायी जानेवाली लकड़ी और पेन्सिल लीजिये। जिस तस्वीर को आप बड़ी बनाना चाहते हैं, उस तस्वीर पर एक सें.मी. की नाप से लकीरें खींचिये।
२. एक ड्रायिंग पेपर पर दो से. मी. की नाप से जितनी बड़ी लकीरें हैं, उतनी बड़ी-बड़ी लकीरें खींचिये।
३. अब ऊपर जो तस्वीर है, देखिये और सावधानी से लकीरों को मिलाइये। दुगुनी तस्वीर बन जायेगी।
पेंग्विन कटआउट बनाएँ
१. मोटे जिल्द पर पेंग्विन का चित्र खींचिये। नहीं तो ऊपर कही गयी पद्धति के अनुसार पैंग्विन चित्र को बड़ा कीजिये।
२. चित्र को कतरिये। लाल रेखाओं पर से कतरिये।
३. बिंदु की लकीरों पर से तह कीजिये। कंठ के पास भीतर की ओर तह कीजिये। पंखों को तह कीजिये। पैरों को बाहर निकालिये। अब आपका चाहा पैंग्विन कटआउट तैयार है।
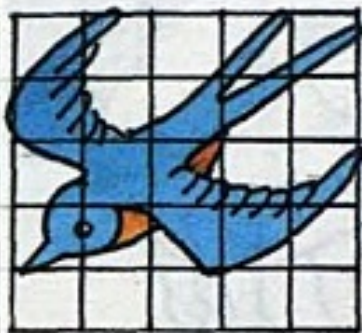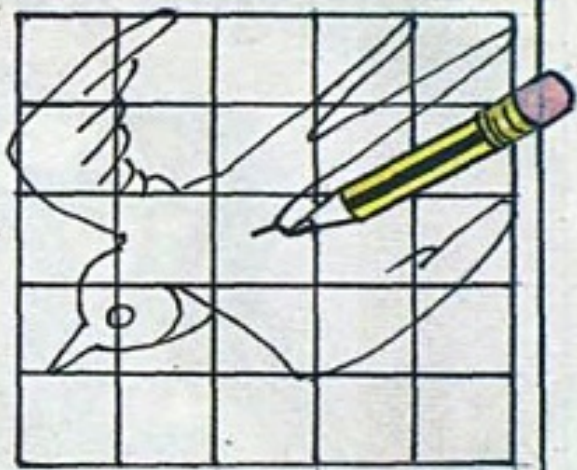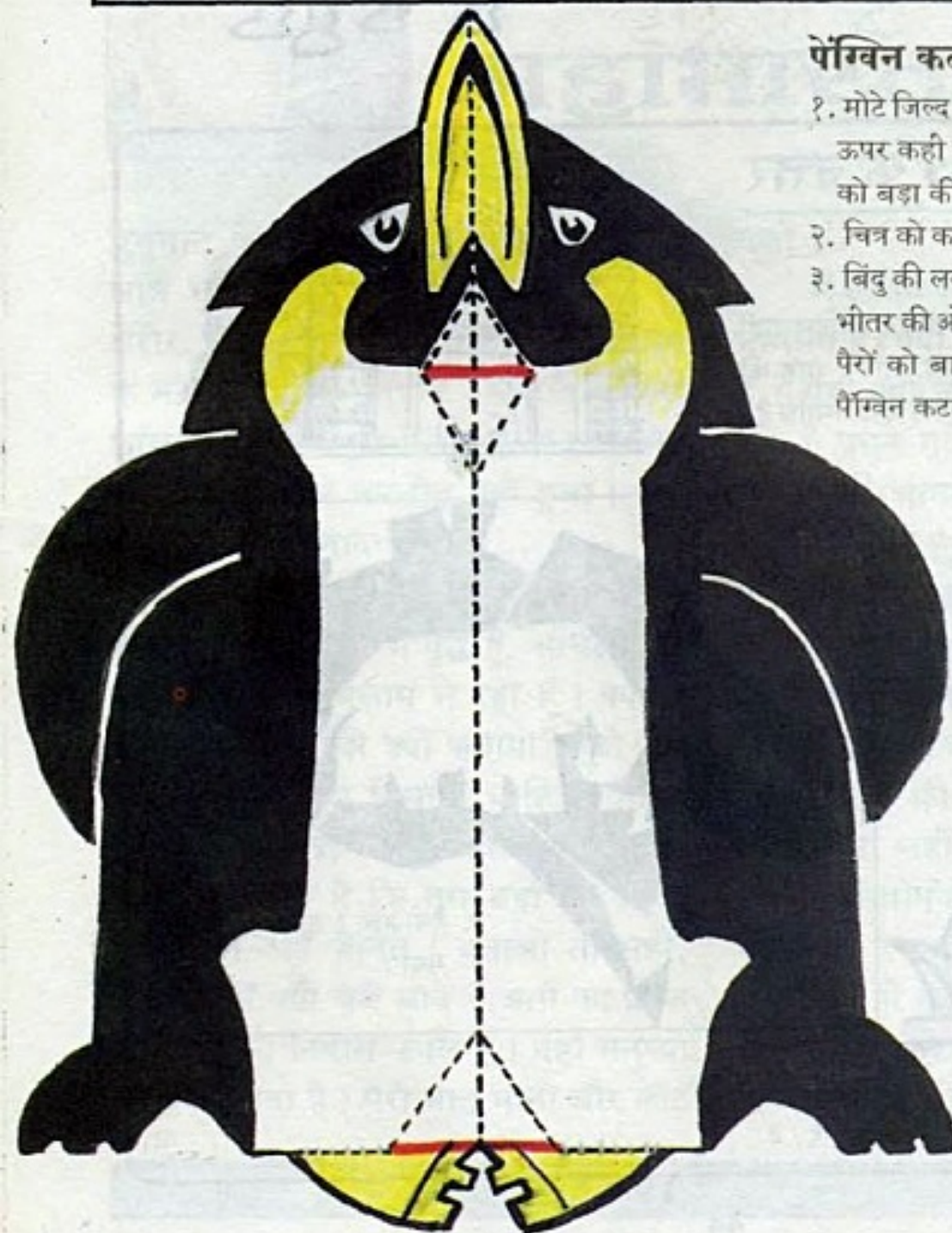
तीन सुगम क्रमों में ऊँट का चित्र खींचिये

सुवर्ण रेखाएँ : ७ के उत्तर

उत्तर

१. गोल गुंबज : यह बिजापूर के शासक आदिलशाही वंश के सातवें सुलतान महम्मद आदिल शाह की समाधि है। यह संसार भर में दूसरी बड़ी समाधि है।

२. जारींगा, असम

३. यह बहाई धर्मवालों का प्रार्थना-मंदिर है। १९वीं शताब्दी के पर्शियन प्रवक्ता बहाउल्ला ने इस धर्म की स्थापना की।

४. डैनोजार। हाथी में बदल गया।

तस्वीरों की खिचड़ी

सही क्रम : १, ८, ४, ५, ६, २, १०, ७, ९, ३

हनुमान केलों के बाग़ में लेटा हुआ था। लाल मुखड़ा, हरी आँखें, सोने के रंग का शरीर, बड़ी-बड़ी भुजाओंवाला हनुमान मार्ग के आर-पार लेटा हुआ था। भीम को अपनी शक्ति व बल पर पूरा विश्वास था। इसलिए उसे देखकर भीम भयभीत नहीं हुआ। पास आया और सिंहनाद किया।

आँखें खोलकर मुस्कुराते हुए हनुमान ने भीम से कहा "पुत्र, मैं वृद्ध हूँ, अस्वस्थ हूँ। थका हुआ हूँ। विश्राम ले रहा हूँ। क्या मैं जानूँ कि तुमने मुझे क्यों जगाया? मुझे जैसे जंतु पर तुम्हें दया दिखानी चाहिये। किन्तु तुमने मेरा निद्रा-भंग करके अच्छा नहीं किया। लगता है कि तुम बड़ों का आदर करना भी नहीं जानते। बताओ तो सही, अकेले यहाँ क्यों चले आये ? आगे का प्रदेश देवताओं का निवास-स्थल है। व्रहाँ मनुष्यों का प्रवेश मना है। मेरी बात मानो और लौट चलो।"

"मैं क्षत्रिय हूँ। कुरु-वंशज हूँ। मेरा नाम भीमसेन है। क्या मैं जान सकता हूँ, आप कौन हैं ? यहाँ क्यों लेटे हुए हैं ? आप बंदर कैसे बने ? पहले मुझे आगे बढ़ने के लिए मार्ग दीजिये।" भीमसेन ने कहा।

"मैं वानर हूँ। यहाँ से नहीं हटूँगा। ज़िद मत करो और यहाँ से चुपचाप चलते बनो"। हनुमान ने कहा।

"मार्ग से नहीं हटेंगे तो मैं चुप नहीं रहूँगा। आपको जबरदस्ती यहाँ से हटाऊँगा। अपने लक्ष्य की पूर्ति किये बिना यहाँ से लौटनेवाला नहीं हूँ। आप मुझे रोक नहीं सकते। मैं आपको सावधान किये देता हूँ।" भीमसेन ने कहा।

"पुत्र, मैं वृद्ध हूँ। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यहाँ से हिलने की शक्ति मुझमें नहीं है। अगर सचमुच ही तुझे जाना है तो मुझे पार

करके जाओ।" हनुमान ने कहा।

"मैं जानता हूँ कि पार करना त्रुटिपूर्ण कार्य है। नहीं तो जिस प्रकार हनुमान ने समुद्र लाँघा, उसी प्रकार मैं न लाँघता ? यह कार्य पहले ही कर चुका होता।" भीम ने कहा। तब हनुमान ने पूछा "यह हनुमान है कौन ? उसे समुद्र लाँघने की क्यों आवश्यकता आ पड़ी ?"

"मेरी ही तरह हनुमान भी वायुदेव के पुत्र हैं। याने वे मेरे बड़े भाई हैं। उनके प्रति मेरी अपार भक्ति व श्रद्धा है। किसी भी कार्य को करने के पहले मैं उनका स्मरण करता हूँ। उनके स्मरण मात्र से मुझमें उत्साह भर आता है। वे बहुत ही महान हैं। श्रीराम की धर्मपत्नी सीता को लंका का राजा रावण उठा ले गया। हनुमान उस देवी को ढूँढते हुए समुद्र लाँघकर लंका गये। मैं भी उस हनुमान की तरह पराक्रमी, बलशाली तथा शक्तिवान हूँ। चुपचाप मार्ग से हट जाइये नहीं तो मेरे हाथों पिटेंगे।" भीम ने उसे सावधान किया।

भीम के दर्प को देखकर हनुमान को हँसी आयी, पर अपनी हँसी को छिपाते हुए कहा "पुत्र, मुझे क्यों पीड़ा पहुँचाते हो। मेरी पूँछ वहाँ से हटाओ और चले जाओ।"

भीम ने बड़ी ही लापरवाही से अपने बायें हाथ से पूँछ को वहाँ से हटाने का प्रयत्न किया। पर वह उसे उठा नहीं पाया। आश्चर्य में डूबे उसने दोनों हाथों से पूँछ को हटाने का व्यर्थ प्रयत्न किया। उसने अपना पूरा बल लगाया, पर कोई लाभ नहीं हुआ।

भीम लज्जित हुआ। उसने दोनों हाथ जोड़े और कहा "मुझे क्षमा करना। मैंने जो बड़ी-बड़ी बातें की, उन्हें भूल जाना। आप कोई सिद्ध या गंधर्व लगते हैं। साधारण वानर हो ही नहीं सकते। आपको कोई आपत्ति न हो तो अपनी कहानी सुनाइयेगा। समझ लीजिये कि मैं आपका शिष्य हूँ।" भीम ने कहा।

हनुमान ने कहा "पुत्र, मैं ही हनुमान हूँ। वाली और सुग्रीव जब एक-दूसरे के शत्रु हुए तब सुग्रीव ने मेरी सहायता माँगी। मुझे अपना मित्र माना।" यों उसने रामायण काल की अपनी कथा सुनायी। अंत में हनुमान ने कहा " मैं यहीं रहता हूँ। यहाँ के गंधर्व व विद्याधर राम की कथा को गाकर सुनाते रहते हैं। उन्हें सुनकर मुझे अपार हर्ष होता है। इस प्रदेश में मनुष्य का प्रवेश निषिद्ध है। बताओ, यहाँ क्यों आये ?"

भीम ने साष्टांग प्रणाम किया और कहा, ''महात्मा, आपके दर्शन से मेरा जन्म सार्थक हो गया। मैं देखना चाहता हूँ कि जब आपने समुद्र लाँघा, तब आपका रूप कैसा था। उस रूप को दिखाकर मुझे धन्य कीजिये।''

''उस काल का रूप दिखाना मेरे लिए क्या संभव है ? समय के साथ-साथ सब परिवर्तित होते हैं'' हनुमान ने कहा।

फिर भी भीम ने बात दुहरायी। ज़िद की। तब हनुमान ने अपना शरीर विस्तृत किया। वह शरीर केले के बाग़ भर में व्याप्त हुआ। लगता था कि वह आकाश को छू रहा है। सूर्य की तरह प्रकाशमान है। आँखें अग्निकणों की तरह थीं, दाढ दीर्घ व क्रूर लग रही थी। भौंहे घनी थीं। लंबी पूँछ भूमि को छू रही थी।

हनुमान ने भीम से कहा ''मेरा रूप देख लिया न ? आवश्यक होने पर मैं अपने शरीर को और विस्तृत कर सकता हूँ। तब शत्रु मेरे इस भयंकर रूप को देखकर भय से काँप उठते हैं। उस रूप को देख पाना तुम्हारे लिए संभव नहीं होगा।''

भीम ने कहा ''मैं इसी रूप को देख नहीं पा रहा हूँ। आँखों के सामने अंधेरा छा गया। कृपा करके इस रूप का उपसंहार कीजिये।''

हनुमान ने अपना असली रूप धारण किया और भीम का आलिंगन करते हुए कहा ''यह सौगंधिक वन का मार्ग है। जाओ। तुम्हारा कल्याण हो। तुम्हें कोई कष्ट पहुँचे तो मेरा स्मरण करना। अपने साहस के बल पर सौगंधिक पुष्प तोड़ोगे तो देवता तुम पर क्रोधित होंगे। उनसे शत्रुता मोल लेने का ख़तरा है।''

दुगुने उत्साह से भरा भीम आगे बढ़ा। पर्वतों के मध्य प्रवाहित होते हुए एक नदी के किनारे उसने सौगंधिक वन को देखा। वैदूर्य के मानिंद नलियोंवाले सौगंधिक पुष्प अपनी सुगंधि फैलाते हुए बड़े ही सुंदर लग रहे थे। द्रौपदी की इच्छा की पूर्ति के लिए जब वह पुष्प तोड़ने का उपक्रम कर रहा था तब भयंकर आकार के राक्षस प्रहरी, हथियार लिये भीम के पास आये और कहा ''महाशय, आप कौन हैं ? हथियार लिये यहाँ क्यों आये ?''

''मैं कुरु वंशज हूँ। पाँडु राजा का पुत्र हूँ। धर्मराज का भाई हूँ। इन पुष्पों के लिए आया हूँ।'' भीम ने कहा।

''यह कुबेर का वन है। यहाँ मानवों को

प्रवेश नहीं। कुबेर की अनुमति पाकर जितने पुष्प चाहिये, ले जाइये।'' राक्षसों ने कहा ।

''मुझे मालूम नहीं, कुबेर कहाँ है ? चंद पुष्पों के लिए उससे भीख माँगूं । कदापि नहीं । मैं क्षत्रिय हूँ । जो चाहता हूँ उसे अपने बल के बूते पर पाना मेरा धर्म है। यह कुबेर की अपनी कोई निजी संपत्ति नहीं है। भगवान से सृजित प्रदेश है। किसी से माँगने का प्रश्न ही नहीं उठता।'' राक्षस मना करते रहे, फिर भी भीम पुष्पों के लिए सरोवर में उतरा ।

राक्षस भीम पर पिल पड़े। भीम ने अपनी गदा घुमायी और कुछ राक्षसों को खूब पीटा । उनमें से कुछ राक्षस कुबेर के पास दौड़े-दौड़े गये और सारा वृत्तांत बताया ।

''भीम को पुष्प तोड़ने दो । मुझे कोई आपत्ति नहीं । उसे रोकने का प्रयत्न मत करो ।'' कुबेर ने घायल राक्षसों से कहा। जब वे लौटे तब उन्होंने देखा कि भीम ने बहुत से पुष्पों का संग्रह किया ।

धर्मराज ने देखा कि भीम कहीं दिखायी नहीं दे रहा है तो उसने द्रौपदी से पूछा ''भीम कहाँ गया ? क्या तुमने उसे कहीं भेजा ?''

द्रौपदी ने कहा कि सौगंधिक पुष्प लाने के लिए भीम ईशान की ओर गया । तब घटोत्कच आया और पाँडवों को उस जगह पर ले गया, जहाँ भीम था। भीम ने द्रौपदी को सौगंधिक पुष्प दिये। पाँडवों ने कुबेर से अनुमति ली और अर्जुन की प्रतीक्षा में गंधमादन पर्वत पर रह गये। घटोत्कच ने उन सबको नरनारायण के आश्रम के पास पहुँचाया और उनकी अनुमति पाकर परिवार सहित लौट चला ।

एक दिन जटासुर नामक एक राक्षस ने द्रौपदी का हरण करने के उद्देश्य से ब्राह्मण का वेष धारण किया और धर्मराज के पास आया। उसने कहा कि मैं परशुराम का शिष्य हूँ, समस्त शास्त्रों का ज्ञाता हूँ और अस्त्र-विद्याओं में भी निपुण हूँ। धर्मराज ने उसकी बातों का विश्वास किया और उसे अपने ही साथ रहने दिया ।

एक बार भीम आखेट करने गया। रोमश, दौम्य तथा अन्य मुनिगण अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आश्रम से दूर गये । यह अवसर पाकर जटासुर ने पाँडवों के हथियारों की चोरी की और तीन पाँडवों व द्रौपदी को उठाकर भागने लगा। सहदेव

पर पिल पड़ा । इतने में भीम भी कहीं से वहाँ आया । जटासुर ने धर्मराज, नकुल, और द्रौपदी को अपने कंधों से गिराया और भीम से भिड़ गया। जब तक जटासुर बलहीन नहीं हुआ, तब तक भीम उससे मल्लयुद्ध करता रहा। आख़िर उसने उसे ऊपर उठाया और चारों ओर घुमाते हुए ज़मीन पर पटक दिया। वह मर गया। तब भीम ने धर्मराज से कहा "आप तो सबका विश्वास करते हैं। आपके ऐसे उदार स्वभाव का अनुचित लाभ उठाया, उस राक्षस ने। मैं सही समय पर न पहुँचता तो पता नहीं, वह राक्षस क्या कर बैठता। मैं अर्जुन को क्या उत्तर देता?" धर्मराज ने उसे शांत किया।

तब सब आश्रम लौटे। अर्जुन अभी नहीं लौटा। उसकी प्रतीक्षा करते हुए पांडव वहाँ के सुँदर पर्वतों व मनोहर दृश्यों को देखते हुए अपना समय व्यतीत करने लगे।

एक दिन चारों पांडव जब एक स्थल पर बैठकर आपस में बातें करने लगे तब उन्होंने देखा कि आकाश में एक वायुयान प्रकाशित हो रहा है और वह थोड़ी ही देर में पहाड़ के पास ही उतरा। उसमें से देवता पुरुष की तरह अर्जुन उतरा।

स्वर्ग से आये अर्जुन ने अपने भाइयों को नमस्कार किया और उनका आलिंगन किया। उन्हीं के बग़ल में बैठ गया।

पांडव इंद्र के रथ को तथा उसकी सुँदरता को देखते रहे। उस रथ के सारथी मातली का उन्होंने स्वागत किया और उसका सत्कार किया। स्वर्ग के क्षेम समाचार जाने। उनके सब प्रश्नों के समाधान देकर मातली रथ-

किसी प्रकार उसकी भुजा से फिसला और चोरी की गयी उन हथियारों में से एक तलवार छीनी । भीम का नाम लेकर वह जोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा और राक्षस का पीछा करने लगा।

धर्मराज ने उस राक्षस से कहा "अरे दुष्ट, यह अधर्म क्यों कर रहे हो ? अपने को बलवान समझते हो तो हमें हमारे हथियार दे दो। हमसे युद्ध करो। हमने तुम्हें आखिर ऐसा क्या नष्ट पहुँचाया, जिसके कारण यह अन्याय करने पर तुल गये हो। हमने तो तुम्हें अपना अतिथि बनाकर रखा।"

सहदेव ने कहा "इससे बातें करना बेकार है। हमसे हो सका तो उसे मार डालें, नहीं तो उसके हाथों मर जाएँ। सिवा इसके, कोई और मार्ग नहीं।" कहता हुआ वह राक्षस

सहित स्वर्ग लौट पड़ा।

अर्जुन को इंद्र ने अनेक दिव्यास्त्र दिये। अर्जुन ने उन्हें द्रौपदी को दिया और धर्मराज के पास ही बैठकर स्वर्ग के अपने अनुभव सुनाये।

अर्जुन ने कहा "दिति की दो पुत्रियाँ हैं। उनके नाम हैं - पुलोमा, कालका। उन दोनों ने तपस्या की और ब्रह्मा को प्रसन्न किया। उन्होंने ब्रह्मा से दो वर माँगे। पहला-उनकी संतान को देव या दानव मार न सकें। दूसरा-हिरण्य नामक बड़ा नगर उन्हें रहने के लिए दिया जाए। ब्रह्मा ने उन्हें दोनों वर दिये। इस कारण पौलोमी व कालकेय उस नगर में रहने लगे। वे देवताओं के प्रति लापरवाही बरतते रहे और जीवन व्यतीत करते रहे। उन राक्षसों को मार डालने के बाद मैंने उस नगर में प्रवेश किया। रथ चलाना मेरे लिए कठिन हो गया। क्योंकि मार्ग में शवों के ढेर थे। नगर भर में राक्षस स्त्रीयों का आर्तनाद गूँज रहा था। रथ की ध्वनि सुनकर वे ड़र के मारे घरों में छिप गयीं। पहले जब उस नगर का निर्माण हुआ तब देवता वहीं रहते थे। स्वयं इंद्र भी वहीं रहते थे। ब्रह्मा के वर के फलस्वरूप राक्षसों ने देवताओं को वहाँ से भगाया और उस नगर पर अपना आधिपत्य जमाया। मातली ने ये सब बातें मुझसे बतायीं। इंद्र ने जब ब्रह्मा से पूछा कि पौलोमी व कालकेयों का निर्मूलन कैसे हो, तब ब्रह्मा ने कहा कि देव-दानव जाति के ही किसी व्यक्ति से यह संभव हो पायेगा। इंद्र ने यह कार्य-भार मुझे सौंपा और कालकेयों को समाप्त करने के लिए मुझे दिव्यास्त्र दिये। इन दिव्यास्त्रों की सहायता से मैंने कालकेयों का सर्वनाश किया और नगर में प्रवेश किया।"

दूसरे दिन प्रातःकाल धर्मराज ने अर्जुन को बुलाया और उसे प्राप्त दिव्यास्त्रों को दिखाने के लिए कहा। अर्जुन ने देवदत्त नामक अपने शंख से लेकर अपने समस्त दिव्यास्त्रों को दिखाया।

उस समय नारद ने वहाँ आकर अर्जुन से कहा "अर्जुन, बिना सबल कारण के कभी भी इनका प्रयोग मत करना। कारण के बिना इनका प्रयोग करोगे तो बड़ा अनर्थ होगा। युद्ध में जब तुम इनका प्रयोग करोगे तब मैं स्वयं आऊँगा और देखूँगा भी।" कहकर नारद वहाँ से चला गया।

'चन्दामामा' की ख़बरें

शांति विश्वविद्यालय

शत्रुओं का सामना कैसे किया जाए? अचानक हमला कैसे हो? युद्ध कैसे करना है? आदि विषयों पर सैनिकों को प्रशिक्षण देनेवाली संस्थाओं के बारे में हम सुन चुके । कुछ संस्थाएँ ऐसी भी हैं, जहाँ उत्साही युवक-युवतियों को युद्ध-विद्या का प्रशिक्षण दिया जाता है । किन्तु हम ऐसी संस्थाओं के बारे में नहीं जानते, जहाँ शिक्षा दी जाती है कि पड़ोसियों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार कैसे किया जाए? सहजीवन कैसे बिताया जाए? शांतिपूर्ण वातावरण में कैसे रहें? ऐसे शांति विश्वविद्यालय की स्थापना के प्रयत्न हो रहे हैं । इसका नाम रखा गया -'युनैटेड एर्थ पीस यूनिवर्सिटी' (समैक्य विश्व शांति विश्वविद्यालय । महाराष्ट्र के पुणे के समीप के सुप्रसिद्ध ज्ञानी ज्ञानेश्वर के निवासस्थल आलंडी नामक एक छोटे शहर में इस विश्वविद्यालय की स्थापना होनेवाली है । नूतन वर्षारंभ के पहले ही इसका शिलान्यास होनेवाला है । इस योज़ना को कार्यान्वित करने के लिए लगभग ३० करोड़ अमेरिकन डालरों का व्यय होगा ।

कविताओं की दीवार

चीन के हुनान प्रांत के बीचोबीच स्थित चांग्डे नगर में बाढ़ को रोकने के लिए २.५ कि.मि. दूर की एक मज़बूत दीवार खड़ी की जा रही है । नगर की जनता का विचार है कि इस दीवार को केवल बाढ़ को रोकने के काम में ही न लाया जाए बल्कि इस दीवार का उपयोग और दूसरे काम में भी हो । दीवार के अंदरी भाग को कविताओं से सुशोभित करनेवाले हैं । उनका निर्णय है कि इस दीवार पर लगभग १००० कविताएँ लिखी जाएँ । इनमें प्राचीन व आधुनिक कवियों की कविताएँ होंगीं । १९४९ से १९७६ तक चीन के नेता मावोसे टुँग ने शासन चलाया । इनका जन्म चांग्डे के निकट के गाँव में ही हुआ । यहाँ यह बताना संगत व आवश्यक है कि मावो स्वयं एक महान कवि थे ।

धुएँ से शक्ति

शहरों में जब कूड़ा-करकट जमा हो जाता है तब उसमें आग लगायी जाती है । तब उसमें से धुआँ निकलता है । यह भी एक प्रकार की शक्ति रखता है, परंतु इसका उपयोग नहीं होता । थायवान में इस शक्ति के उपयोग का भी एक मार्ग ढूँढ़ा गया है । पैटोन नगर की सरहदों पर कूड़ा-करकट जलाया जाता है । उसी स्थल पर एक रेस्टारेंट बनाया जा रहा है । यहाँ १५० फुट की ऊँचाई के धुएँ की एक नली है । यहाँ निर्मित होनेवाला दो मंजिलोंवाला रेस्टारेंट भूमि से १२० फुट की ऊँचाई पर होगा । रेस्टारेंट धुएँ की नली के चारों ओर घूमता रहेगा । इसमें एक सौ लोग बैठ सकते हैं । ऊपरी मंजिल में बारह दूरबीन होंगे । इसका निर्माण जब पूरा होगा, संसार में यह इस प्रकार का पहला रेस्टारेंट होगा ।

गुफ़ाएँ, जो घरों में बदल रही हैं

चीन में क़रीबन चालीस लाख लोग गुफ़ाओं में बसे हैं । वे शहरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं और नौकरियों के लिए आकर शहरों में ही बसने लगे हैं । खाली इन गुफ़ाओं को घरों के रूप में परिवर्तित करके उन्हें रहने लायक सुंदर घर बनाने के प्रयत्न जारी हैं । ये प्रयत्न सरकार ने स्वयं अपने हाथों में लिया है । सरकार का मानना है कि पक्षियों के घोंसलों की तरह के फ्लाटो से तंग लोग ऐसी गुफ़ाओं में रहना पसंद करेंगे । चीन की लोस पीठभूमि की गुफ़ाओं का आधुनीकरण हो रहा है । गृह-निर्माण के मज़दूर इस काम में लगे हैं । गान्सु, हेनान, पान्सी प्रांतों की गुफ़ाएँ अब घरों में बदल गयी हैं । इससे बिजली की बचत और प्रकृति की रक्षा होती है, । गुफ़ाओं के ये घर अंतर्राष्ट्रीय वास्तुशास्त्रज्ञों की दृष्टि को आकर्षित कर रहे हैं ।

‘चन्दामामा’ परिशिष्ट - ९८

हमारे देश के वृक्ष

चल्ता

इस शीर्षक के अंतर्गत जिन-जिन वृक्षों के बारे में हम जानकारी प्राप्त कर रहे हैं, वे सब के सब हमारे ही देश में उत्पन्न नहीं हुए। बुहत-से वृक्ष दूर-दूर देशों में उत्पन्न हुए और भारत में विस्तरित हुए। किन्तु आकार में बड़ा चल्ता वृक्ष हमारे ही देश का है। वृक्षशास्त्र में इसे दिल्लेनिया इंडिका कहते हैं। इंडिका का अर्थ है कि यह भारत का है।

हिन्दी में इसे ‘चल्ता’ बंगाली व मलयालम भाषाओं में ‘चलिता’ ओरिया में ‘चलोता’ गुजराती में ‘कारंबाल’ मराठी में ‘कर्माल’ कन्नड् में ‘बेट्टद कनगाल’ तेलुगु में ‘पेद्द कालिंगा’ कहते हैं।

पश्चिम बंगाल, बिहार, असम, राज्यों में ये वृक्ष अधिकतर दिखायी देते हैं। अन्य प्रान्तों में कहीं-कहीं पाये जाते हैं। सीधे पनपनेवाले इस वृक्ष की टहनियाँ गोल मुकुट की तरह होती हैं। इस वृक्ष की छाल कोमल होती है। ये वृक्ष १०-२० मी. की ऊँचाई तक पनपते हैं। टहनियाँ सब तरफ़ फैली हुई होती हैं।

पत्ते हरे होते हैं और सदा चमकते रहते हैं। टहनियों के अंतिम भाग चौड़े और नोकदार होते हैं। पत्ते क्रमवार होते हैं। फलों में समानान्तर रंग-रेशे होते हैं।

सुगंधि फैलानेवाले इसके बड़े-बड़े फूल सफ़ेद होते हैं। टहनियों के अंतिम भाग में अलग-अलग फूलते हैं। ये वृक्ष जून-जुलाई में फूलों से भरा हुआ होता है। इसके फल बड़े होते हैं। लगभग ८-१२ मीटरों के होते हैं। ऊपर का छिलका सख्त होता है। अंदर गूदे के बीचोंबीच इसके बीज सेम के बीज की तरह होते हैं।

हमारे देश के पश्चिमी प्रांतों में पाये जानेवाले दिल्लीनिया जाति के पेड़ों के पत्ते केलों के पत्तों की तरह लंबे व चौड़े होते हैं।
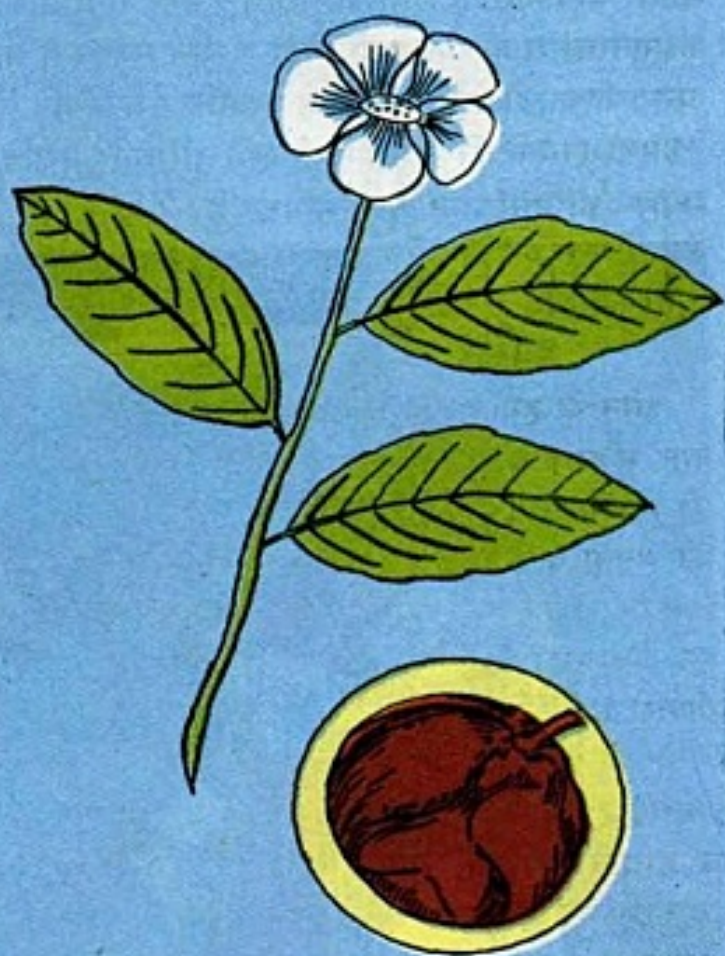
बलाकि

हमारे प्राचीन ऋषि जिज्ञासु थे। उन्हें बहुत सारा मालूम था, फिर भी और जानने की जिज्ञासा उनमें भरी होती थी। वे महात्मा चाहते थे कि ज्ञान-दीप उनके हृदयों को कांति से भर दें। वे विनय-संपन्न थे।

किन्तु मुनिकुमार बलाकि का स्वभाव इससे भिन्न था। विद्याभ्यास समाप्त होते ही वह समझने लगा और इस बात पर गर्व करने लगा कि मैं सर्वज्ञानी हूँ। उसे इस बात का गर्व था कि बड़े से बड़े ज्ञानियों को भी ज्ञान का बोध करने की क्षमता मुझमें है। इस कारण उसे सब लोग गर्वीले बलाकि कहकर पुकारने लगे।

काशी का राजा बड़ा ही जिज्ञासु था। उसमें ज्ञान की पिपासा थी। यह बात बलाकि को मालूम हुई। वह फ़ौरन काशी गया और राजा से मिला। उसने दावा किया कि वह उसे ब्रह्मज्ञान का बोध करा सकता है। राजा उसकी बातों से प्रसन्न हुआ और इसके लिए अपनी स्वीकृति दी। परंतु बलाकि कोई मंत्र, श्लोक सुनाये, इसके पहले ही राजा वह मंत्र और श्लोक पढ़ जाते थे। उनका अर्थ भी व्याख्या-सहित बता देते थे। बलाकि को यह जानने में विलंब नहीं हुआ कि महाराज उससे भी बड़े ज्ञानी हैं। अपने गर्व व अज्ञान पर वह शर्मिंदा हुआ। उसने काशी के राजा से क्षमा मांगी और उसका शिष्य बन गया।

एक दिन राजा ने बलाकि को एक सुषुप्त मानव दिखाया। उसने बलाकि से पूछा कि सुषुप्तावस्था में उसकी चेतना कहाँ होती है? वह समाधान दे नहीं पाया और चुप रह गया। तब राजा ने स्वयं विवरण देते हुए कहा "सुषुप्तावस्था में याने गाढ़ी निद्रा में सोये मनुष्य में चेतना नहीं होती, फिर भी वह अनिर्वचनीय तुरियानंद (ब्रह्मलीनता) अनुभव करता है। क्योंकि उस स्थिति में उसकी आत्मा भगवान के समीप संचरित होती रहती है। मनुष्य जगने की स्थिति में भी ऐसी तुरियानंद स्थिति का अनुभव कर पाये तो इसका यह अर्थ हुआ कि उसमें सचमुच ही आत्मज्ञान व आत्मनिग्रह है।"

क्या तुम जानते हो?

१. 'कथा सरित्सागर' के रचयिता कौन हैं ?
२. डैनामैट का मुख्य रासायनिक पदार्थ क्या है ?
३. होमर, मिल्टन, हेलेन कीलर, वेद मेहता - इनके बीच का साम्य क्या है ?
४. भारत के सांविधानिक शासन-पत्र में संपत्ति केअधिकारों तथा प्राथमिक अधिकारों से हटा दिया गया संशोधन क्या है ?
५. 'भारतीदास' के नाम से प्रसिद्ध रचयिता कौन हैं, जो राजनैतिक नेता भी हैं ?
६. 'मेगसेत्से' पुरस्कार पानेवाले प्रथम भारतीय कौन हैं ?
७. उस संस्था का नाम क्या है, जिसने प्रप्रथम नोबेल शांति पुरस्कार पाया ?
८. हर साल दिसंबर, १० को नोबेल पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। उस तारीख की विशिष्टता क्या है ?
९. 'लिबर्टी' मूर्ति की रूपकल्पना किसने की?
१०. संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाएँ क्या-क्या हैं ?
११. संयुक्त राष्ट्र संघ का 'चार्टर' (पत्र) कब अमल में आया ?
१२. भारत ने कब मांग पेश की कि उसे सुरक्षा समिति में शाश्वत स्थान चाहिये ?
१३. 'रेवेन्यू स्टाम्प' की आत्मकथा लिखनेवाले कौन हैं ?
१४. भारत का वह राज्य कौन-सा है, जिसने अंग्रेज़ी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया ?
१५. हमारे देश का सर्वप्रथम राष्ट्रीय मार्ग कौन-सा है ?
१६. अगला 'वरल्ड कप क्रिकेट' किस देश में होनेवाला है ?

उत्तर

१. सोमदेव
२. नैट्रोग्लिजरिन
३. अंधे होते हुए भी महान ग्रंथों की रचना की।
४. १९७२ में लाया गया ४४ वाँ संशोधन
५. अटल बिहारी बाजपेयी
६. आचार्य विनोबा भावे
७. बेल्जियम की अंतर्राष्ट्रीय कानूनी संस्था
८. संसार के मानवों के हक़ों का दिवस
९. फ्रेड्रिक अगस्टे बार्तोल्डी
१०. अरबीक, चैनीस, इंग्लीश, फ्रेंच, रूसी, स्पानिश
११. १९४५ अक्तूबर २४
१२. १९९४ अक्तूबर ३
१३. अमृता प्रीतम
१४. नागालांड
१५. दिल्ली से चंदीघर
१६. इंग्लैंड

अधिकार बल

जटावल्लभ नामक एक अध्यापक पहली बार शहर गया। वहाँ ठहरने के लिए उसने सराय में क़दम रखा। वहाँ होहल्ला मचा हुआ था। कुछ लोग ताश खेल रहे थे तो कुछ लोग शराब पी रहे थे। वह आश्चर्य में डूबा हुआ था कि यह सराय है या शराब पीने का अड्डा। इतने में किसी ने चिल्लाया ''आ गया शूरवीर''।

बस, पियक्कड़ और जुवारी खुले दरवाजे से बाहर भागे। इसी समय पर दूसरी तरफ़ से बंद दरवाज़े को अपना पूरा बल लगाकर किसी ने लात मारी। दरवाज़े टूटकर गिर पड़े।

जटावल्लभ स्तब्ध होकर उसी ओर देखने लगा। उसने देखा कि छे फुट का एक हृष्टपुष्ट व लंबा आदमी वहाँ खड़ा है। तिरछी मूँछें व आग बरसाती हुई उसकी आँखें देखकर वह निस्तेज रह गया। अंदर आते ही उसने जटावल्लभ को देखते हुए चिल्लाया ''प्यास, प्यास। लकड़ी की उस मेज़ पर पानी का घड़ा है , दो।''

''बाप रे, फंस गया। आख़िर इसी के हाथ में फँसना था मुझे'' अपने आप कहते हुए पानी का घड़ा उसने उठाया और आंगतुक को दिया। उस समय भय से उसके हाथ कांप रहे थे।

उसने घड़ा उठाया और पल भर में पूरा पानी पी लिया। जटावल्लभ ने सोचा कि इससे दोस्ती कर लेनी ही अच्छी है। इसलिये उसने आगंतुक से कहा ''आपको और पानी चाहिये ? खाने का कोई इंतज़ाम करूँ ?''

''पीना भी चाहता हूँ, खाना भी चाहता हूँ। पर अरे बहरे, सुना नहीं, सत्ताधारी अब आने ही वाला है। देखो, आ गया'' कहते हुए वह वहाँ से भाग गया।

इतने में एक नाटे आदमी ने प्रवेश किया, जिसके पीछे-पीछे हथियार लैस दस सिपाही भी थे। उसने पतले स्वर में कहा ''इन पियक्कड़ों और जुवारियों को ख़बर लग गयी है कि मैं आनेवाला हूँ, इसलिए सब के सब दुम दबाकर भाग गये। उनका पीछा करो और उन्हें पकड़ लो। इतने में मैं इस सराय के मालिक को पकड़कर उसके हाथों में हथकड़ियाँ लगा दूँगा ।''

साधारण जनता मनुष्य का देहबल देखकर नहीं बल्कि उनसे डरती है, जिनके पीछे अधिकार बल है। इस सत्य को जानकर जटावल्लभ मुस्कुराता रहा।

सुख-दुख बाँटो

सूरज काम पर शहर निकला । रास्ते में खाने के लिए उसकी पत्नी ने तीन रोटियाँ दीं। वह जंगल से होते हुए जाने लगा, क्योंकि वह रास्ता नज़दीक पड़ता था। बीच जंगल में एक युवक ने उसे रोका।

वह युवक देखने में बड़े घर का लड़का लग रहा था। वह क़ीमती कपड़े पहने हुए था। पर वे मैले थे। उस युवक ने सूरज से मांग की कि पहले खाने के लिए उसे कुछ दिया जाए। सूरज ने देने से इनकार किया। युवक ने ज़बरदस्ती उससे रोटियाँ छीन लीं और खा लिया। वह युवक बहुत ही भूखा था, इसलिए उसने जल्दी-जल्दी खा लिया। सूरज चिल्लाये जा रहा था कि उसे खाने के लिए कुछ नहीं बचा। युवक ने उसके रोने-धोने की परवाह ही नहीं की और कहा "पास ही का भद्रगिरि जानते हो न ?" सूरज ने सिर हिलाते हुए कहा कि हाँ, मैं जानता हूँ।

उसने सूरज से कहा "शहर से आ रहा हूँ। मुझे भद्रगिरि जाना है। भटक गया और इस जंगल में आकर फँस गया। तुम मुझे भद्रगिरि पहुँचाओ। वहाँ के ज़मींदार मेरे पिता हैं। तुम मुझे उनके पास पहुँचाओगे तो वे तुम्हें अच्छी भेंट देंगे।"

भेंट पाने की आशा में सूरज उस युवक को भद्रगिरि ले गया। ज़मींदार ने खुश होकर उसे मोतियों की माला भेंट में दी।

सूरज ने सोचा तक नहीं था कि उसके इस छोटे-से काम के लिए इतना बड़ा प्रतिफल प्राप्त होगा। देखते ही पता लग जाता है कि मोतियों की वह माला क़ीमती है। अब सूरज का आनंद वर्णनातीत है।

सूरज ने मोतियों की माला अपने गले में डाल ली। शहर जाने की इच्छा त्यज दी। वह वहाँ से सीधे अपने गाँव की ओर चला।

उसे इस बात की जल्दी थी कि फ़ौरन गाँव पहुँच जाऊँ और परिचित लोगों से अपने भाग्य का किस्सा सुनाऊँ।

पहले वह मिला गोविंद से। किसी आवश्यक काम पर जाते हुए गोविंद को उसने रोका और कहा "देखो, मेरे गले में लटकती हुई मोतियों की यह माला। यह भद्रगिरि के ज़मींदार की है। उन्होंने इसे मुझे भेंट में दी।"

गोविंद ने उसकी बातों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह जल्दी में था। उसने कहा "लक्ष्मण की बेटी की शादी तय हुई है। गाँव के सब लोग इस समाचार को सुनकर बहुत ही खुश हैं। मैं जा रहा हूँ लक्ष्मण से मिलने और यह कहने कि मुझसे जितना हो सके, मैं तुम्हारी मदद करूँगा। क्या तुम भी चलोगे?"

लक्ष्मण की बेटी अक़्लमंद थी, काम-काज में भी दक्ष थी, देखने में भी सुंदर थी। पर उसकी दायीं आँख ऐंची थी। इसी कारण उसके विवाह में इतना विलंब हुआ। कोई रिश्ता पक्का हो नहीं पा रहा था। गाँव के सब लोगों को लक्ष्मण के प्रति सहानुभूति थी। सब चाहते थे कि उसकी बेटी की शादी कहीं पक्की हो जाए और उसका पिता निश्चिंत हो जाए। सूरज यह जानता था। किन्तु गोविंद ने उसके भाग्य पर कोई ध्यान ही नहीं दिया, उल्टे लक्ष्मण की बेटी के भाग्य की सराहना करने लगा तो वह नाराज़ हो गया और कहा "मुझे एक ज़रूरी काम है, मैं नहीं आ सकता" कहता हुआ वह आगे बढ़ गया।

थोड़ी दूर जाने के बाद उसकी मुलाक़ात हुई अध्यापक पूर्णानंद से। सूरज ने अपने गले की माला उसे दिखाते हुए कहा "यह कोई साधारण माला नहीं है। यह भद्रगिरि के ज़मींदार की है। उन्होंने मुझे भेंट में दी।"

"अच्छा है" वह कह गया, क्योंकि उसे कुछ तो कहना चाहिये। फिर कहने लगा "हमारे गाँव के पंडित रामशास्त्री का सम्मान राजधानी में हुआ। इससे हमारे गाँव की इज़्ज़त बढ़ गयी। सुना कि रामशास्त्री कल लौटे हैं। मैं उन्हीं को देखने जा रहा हूँ। तुम भी आओगे?"

सूरज ने मन ही मन सोचा कि मैं अपनी माला के बारे में इससे बता रहा हूँ और यह रामशास्त्री के गुण गाये जा रहा है। उसने अपनी चिढ़ को छिपाते हुए कहा "मैं किसी और काम पर लगा हूँ, अब नहीं आ सकता।" यों कहकर वह आगे बढ़ गया।

सूरज आगे बढ़ा और बग़ल की गली में मुड़ा तो उसका सामना हुआ नागराज से। वह जल्दी में था, पर सूरज को देखकर रुक गया और कहा "तुम्हारे गले में कुछ चमक रहा है। क्या माला है ? शहर में खरीदा है क्या ? मोतियों की माला लगती है। नक़ली हैं या असली मोतियाँ हैं ? क्या दाम है ?" कहते हुए उसने प्रश्नों की बौछार कर दी।

सूरज को खुशी हुई कि माला के बारे में बिना बताये ही नागराज ने स्वयं ही उसके बारे में पूछ-ताछ की। खुश होते हुए उसने कहा "यह भद्रगिरि ज़मींदार की है। असली मोतियों की माला है। भद्रगिरि ज़मींदार की माला खरीदना क्या मेरे बस की बात है। उन्होंने मुझे यह भेंट में दी। नहीं तो भला यह मेरे गले को कैसे सुशोभित करती।"

नागराज ने कोई और प्रश्न नहीं किया। सूरज के दिये विवरण को अनसुनी करते हुए उसने कहा "सुना तुमने ? तुम तो जानते हो कि हमारे विराट की भूमि खुश्क है। दो सालों से बारिश ही नहीं हुई। उसके खेत में फ़सल ही नहीं हुई। कल ही उसके कुएँ में पानी भर आया। सब खुश हैं कि विराट के कष्टों के दिन गये। मैं जा रहा हूँ उसी से मिलने और साथ खुशी बाँटने। तुम भी चलोगे ?"

सूरज में आक्रोश भर आया। कोई भी उसके भाग्य की सराहना नहीं कर रहा है। कोई पूछ भी नहीं रहा है कि ज़मींदार ने क्यों यह माला भेंट में दी। नाराज़ होता हुआ सीधे अपना घर गया।

पत्नी ने मोतियों की माला देखी और उससे पूछकर पूरे विवरण जानने के बाद बोली "यह तो बड़े भाग्य की बात है। लंबे अर्से से मोतियों की माला बनवाने की मेरी बड़ी इच्छा थी। यह मिली, मुझे इस प्रकार।" उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

"यह माला मर्दों की है। ज़मींदार ने स्वयं अपने कँठ से निकालकर दी थी।" फ़ौरन सूरज ने कहा।

उसकी पत्नी ने हँसते हुए कहा "मालाएँ कहीं मर्दों के लिए अलग और औरतों के लिए अलग होती हैं ? संपन्न पुरुष इन्हें पहनते हैं। मध्य वर्ग के घरों में स्त्रीयाँ इन्हें पहनती हैं। ऐसे घरों में इन्हें मर्द पहनते ही नहीं।"

"मेरी श्रेष्ठता व सद्गुण को देखते हुए ज़मींदार ने यह माला मुझे भेंट में दी। इसलिए मैं ही इसे पहनूँगा।" सूरज ने कहा।

"तुम्हारी ऐसी क्या श्रेष्ठता, ऐसे क्या

सद्‌गुण, जिनपर तुम्हें गर्व है। भूखे आदमी को तुमने रोटियाँ तक नहीं दीं। उसने बलपूर्वक छीन लीं तो निकम्मे की तरह रोते रहे। इस उम्मीद में उसे घर तक पहुँचाया कि ज़मींदार का लड़का है, कुछ न कुछ तो देगा ही। यह सब भाग्य की बात है। इस विषय में तो तुमने कोई तीर नहीं मारा। अगर मैं रोटियाँ बनाकर नहीं देती तो उस ज़मींदार के लड़के में इतनी ताक़त भी न होती कि वह तुमसे बोल पाये। सच कहा जाए तो तुम्हारे इस भाग्य का हक़दार मैं हूँ।''

''गाँव के और लोगों की तरह तुम भी मुझसे जलते हो'' सूरज ने कहा।

''गाँव के लोग तुमसे जलते हैं? भला वे तुमसे क्यों जलें? ऐसा क्या विशेष सद्‌गुण तुममें हैं, जिनपर वे या मैं तुमसे जलूँ।'' सूरज की पत्नी ने निधड़क पूछा।

तब सूरज ने अपने गाँव में प्रवेश तक से लेकर जो-जो हुआ, पूरा किस्सा सुनाया और कहा ''एक, दो, तीन नहीं, पाँच लोगों से मेरी मुलाक़ात हुई। किसी एक ने भी मेरे भाग्य को सराहा नहीं। यह सब ईर्ष्या नहीं तो और क्या है?''

''यह कदापि ईर्ष्या नहीं। सोचकर बताना, गाँव के किसी का शुभ हुआ या किसी की अच्छाई हुई तो तुम कभी हर्षित हुए? अपनी खुशी जाहिर की? उसके भाग्य को सराहा? उनके सुख में, उनके आनंद में भाग लिया? जब तुमने ऐसा कुछ नहीं किया तो तुम्हारे आनंद में वे क्याकर भाग लेंगे, तुम्हारे भाग्य की सराहना क्यों करेंगे, तुम्हारे साथ खुशी कैसे बाँटेंगे? आनंद में भी लेन-देन का होना ज़रूरी है।'' सूरज की पत्नी नें कहा।

पत्नी की सलाह व वास्तविकता से भरी इन बातों को सुनकर सूरज निश्चेष्ट रह गया। उसकी पत्नी ने पुनः कहा ''जो भी

तुमसे मिला, हर कोई दूसरे के भाग्य अथवा उनकी अच्छाई के बारे में कहता रहा। तुम तो अपने ही बारे में सोचते रहे, किसी और के बारे में सोचने के लिए तुम तैयार ही नहीं थे। इतने सालों तक हमने पारिवारिक जीवन बिताया । किन्तु मेरे लिए एक गहना ही सही, तुमने बनवाया या खरीदा ? अयाचित ही तुम्हें यह आभूषण मिला। सोचा तक नहीं कि यह प्यार से पत्नी को दूँ। तुम तो अव्वल दर्जे के खुदगर्ज़ हो।''

सूरज ने तुरंत अपने गले की माला उतारी और पत्नी को देकर कहा '' मैं इसे डालकर क्या करूँ? मैं तो तुम्हें देना ही चाहता था। केवल नाटक करता रहा। पर इतने में तुम आपे से बाहर हो गयी और मुझपर आरोप लगाया कि मैं स्वार्थी हूँ, अपना ही सोचता हूँ, अपना ही करता हूँ।''

सूरज की पत्नी ने माला अपने गले में डाल ली और उसके दोनों पैरों को छूती हुई बोली ''हाँ, मेरी बुद्धि तंग है, छोटी है, इसी कारण मैंने ऐसी बातें कीं। तुम्हारी बुद्धि विशाल है, बड़ी है, इसीलिए चंद्रगिरि के ज़मींदार ने तुम्हें इतनी बड़ी भेंट दी। पता नहीं यह मेरे कितने पुण्यों का फल है।''
उसकी बातों को सुनकर सूरज के आश्चर्य की सीमा नहीं रही। पर पत्नी के मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर वह सचमुच ही बहुत ही खुश हुआ।

सूरज तुरंत लक्ष्मण के घर गया। उसकी बेटी की शादी पक्की हुई, इसपर उसने तुरंत हर्ष प्रकट किया। उससे वादा भी किया कि अपनी तरफ़ से जितनी मदद हो सके, करूँगा। वहाँ से वह सीधे रामशास्त्री के घर गया और राजधानी में उसके सम्मान में संपन्न सभा संबंधित विवरण जाने। उसे अपनी तरफ़ से भी बधाई दी। वहाँ से वह विराट के खेत में गया, जहाँ वह अपने कुएँ के पानी से अपना खेत सींच रहा था। उसने उसे भी बधाई दी और कुएँ का थोड़ा-सा पानी चखा। वह आज बहुत ही खुश है। उस दिन रात को घोड़े बेचकर सोया। दूसरे दिन सबेरे जब वह उठा और बाहर आया तो देखा कि गाँव की पूरी जनता उसके घर के सामने है।

वे चंद्रगिरि के ज़मींदार की दी हुई मोतियों की माला के बारे में जानने और स्वयं उसे देखने वहाँ इकट्ठे हुए थे।

उधार का गहना

कमला का बाप ग़रीब था। पत्नी के मर जाने के बाद बाप और माँ बनकर उसी ने उसे पाला-पोसा। भगवान ने यद्यपि कमला को संपत्ति नहीं दी, पर सौंदर्य दिया। दर्पण मात्र सुँदरता दिखाता है। किन्तु सभी उसकी सुँदरता की भरपूर प्रशंसा करते थे। उसे भी मालूम हुआ कि वह अवूर्व संदरी है। यौवन में क़दम रखने के बाद वह भी स्वप्न-लोक में विचरने लगी। वह कल्पना-लोक में विचरती हुई सोचने लगी कि उसकी सुँदरता पर मुग्ध होकर कोई ज़मींदार उसे अपनायेगा और उसे सुखी रखेगा।

कमला से शादी करने बहुत युवक आये। किन्तु जितने भी आये, वे सबके सब, मध्यम वर्ग के परिवारों के ही थे। वे दहेज भी चाहते थे, लेकिन दहेज देने की शक्ति नहीं रखता था, उसका बाप। इसलिए कोई रिश्ता तय नहीं हो पाया।

इन परिस्थितियों में शहर में काम करनेवाले बेनर्जी को कमला बहुत ही अच्छी लगी। उसके माँ-बाप कभी के मर चुके थे। बिना दहेज के शादी करने के लिए वह सन्नद्ध हुआ। रिश्तेदारों ने कमला के भाग्य की सराहना की। किन्तु कमला निराश हुई। उसने सपने देखे थे कि शादी करने के बाद उसकी स्थिति में आकाश-पाताल का अंतर आयेगा और अपनी सुँदरता के बल पर वह उच्च स्थल पर जा बैठेगी।

कमला परिवार बसाने बेनर्जी के साथ शहर आयी। बेनर्जी का अपना घर था। खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी। वह पत्नी कमला को बहुत चाहता था। पर कमला का मन सूना-सूना था। उसे सदा कोई कमी महसूस हो रही थी। रेशमी साड़ियों व आभूषणों का न होना उसे खटकता था।

एक बार बेनर्जी का रिश्तेदार, शादी पर

रूपमती व्यास

उसे न्योता देने गाँव से उसके यहाँ आया। इस आदमी ने बेनर्जी की बड़ी मदद की, जब वह कष्टों में डूबा हुआ था। बेनर्जी ने कमला से कहा "हमें इस शादी पर अवश्य जाना है।" कमला ने कोई उत्साह नहीं दिखाया।

उसने कहा "कौन-सा मुँह लेकर मुझे बुला रहे हो। मेरा यह गला खाली-खाली है। इसे देखकर क्या लोग हँसेंगे नहीं ? पहनने के लिए कोई अच्छी साड़ी भी नहीं है। सबके बीच आकर अपनी हँसी उड़वाऊँ ? मुझे नहीं आना है। तुम्हें जाना है तो जाओ।"

बेनर्जी बिना कुछ कहे सीधे अपने मालिक के पास गया और कर्ज़ लिया। उसने एक अच्छी साड़ी खरीदी। नीले रंग की वह साड़ी देखने में बहुत ही सुंदर लग रही थी। उसने चमेली के फूल खरीदे और घर पहुँचा।

नयी साड़ी और चमेली फूलों को पत्नी के सुपुर्द करते हुए उसने कहा "कमला, कोई भी आभूषण तुम्हारी सुंदरता के सामने नगण्य है। हाँ, मैं मानता हूँ कि इस शुभ कार्य के अवसर पर किसी आभूषण के बिना जाना समुचित नहीं है। एक काम करते हैं। पड़ोस की चंद्रकांता के गले में गहने ही गहने हैं। दो तीन दिनों में वापस आ ही जायेंगे, इसलिए उससे पूछना कि क्या वह कोई एक गहना उधार में देगी ?"

कमला नहीं चाहती थी, पर उसने चंद्रकांता से गहना माँगा। वह अल्मारी से अपने गहनों की पेटी ले आयी और उसके सामने रखी। उसमें से चंद्रहार कमला को बहुत अच्छा लगा। दो तीन दिनों में लौटाने का वादा करके वह चंद्रहार ले आयी।

बैल-गाड़ी में तीन घंटों की सफर के बाद बेनर्जी और कमला उसके दोस्त के घर पहुँचे। शादी दूसरे दिन सबेरे दस बजे थी। सबेरे ही कमला ने स्नान करने के बाद नयी साड़ी

पहनी और उधार में लाया चंद्रहार गले में डाल लिया। चमेली के पुष्पों को अपने बालों में सजाया। ऐसे ही वह सहज सुंदरी थी, इस अलंकार ने उसकी सुंदरता में चार-चांद लगाये। शादी पर जो आये, उन सबकी दृष्टि उसी पर केंद्रित थी। कमला ने यह भाँपा और उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

शादी हो जाने के दूसरे ही दिन पति-पत्नी शहर लौट आये। चंद्रकांता को गहना वापस लौटाने के लिए उसने पेटी खोली और खाली पेटी को देखकर एकदम चिल्ला पड़ी। चंद्रहार ग़ायब था। कमला को अच्छी तरह से याद था कि शादी के समय पहने उस गहने को उसने शाम तक अपने ही गले में रहने दिया और शाम को स्नान करने के बाद पेटी में रख दिया और ताला भी लगाया।

विषय जानकर बेनर्जी ने कमला को सांत्वना देते हुए कहा "अब पता नहीं लगा सकते कि शादी पर आये लोगों में से किसने यह चोरी की। अब चंद्रकांता से हम क्या कहें? क्या वह विश्वास करेगी कि गहने की चोरी हो गयी? वह हमपर ज़रूर आरोप लगायेगी कि हम धोखेबाज़ हैं। अब हमारे सामने एक ही रास्ता है। वह है, उसी तरह का एक हार खरीदें और चुपचाप उसे दे दें। किसी दूसरे को यह बात मालूम ही न हो।"

बेनर्जी बाहर गया और दुपहर तक लौट आया। उसने कहा कि "मालिक से थोड़ा कर्ज़ लिया और घर गिरवी पर रखकर रक़म ले आया। उस रक़म से अब हमें चंद्रहार खरीदना है।" पति-पत्नी को बहुत दूकानों में ढूँढने के बाद एक दुकान में असली चंद्रहार की तरह का चंद्रहार मिला।

उसी दिन शाम को कमला ने, चंद्रकांता को वह हार लौटाया। दो दिनों के बाद कमला ने नौकरानी को नौकरी से निकाल दिया और खुद घर का काम-काज संभालने लगी। खाली पिछवाड़े में तरकारियों के बीज बोये। झाड़ू बनाकर दुकानों में बिकवाने लगी। बेनर्जी इन कामों में पत्नी की मदद करता रहता था।

यों पाँच साल गुजर गये। मेहनत करने के कारण, अधिक काम-काज करने की वजह से उसकी शारीरिक कांति थोड़ी-सी घट गयी। उसकी शारीरिक कोमलता में थोड़ा-सा उतार आया। कभी एक समय था, जब कि घंटों वह दर्पण के सामने खड़ी होती थी और अपनी सुंदरता को देखती ही

रहती थी। पर अब उसे अपनी सुँदरता के बारे में सोचने की भी फुरसत नहीं। अब उसमें जीवन के प्रति कोई असंतृप्त भावना नहीं रह गयी।

एक दिन कमला ने अपनी कमाई का पैसा पेटी से निकाला और गिनने लगी। बहुत ही खुश होती हुई वह चिल्ला उठी। चंद्रहार खरीदने के लिए लिया गया कर्ज़, इस धन से पूरा चुक जायेगा। अब घर को गिरवी से छुड़ाया जा सकता है।

घर लौटते ही यह खुशखबरी सुनकर बेनर्जी ने कहा ''कमला, कहते हैं कि उधार का माल बुहत भारी पड़ता है। उस समय की परिस्थितियों में यह वास्तविकता तुम्हें बताता तो भी कोई फ़ायदा नहीं होता। मुझे विश्वास है कि तुम मुझे ग़लत नहीं समझोगी। इस खुशी के मौक़े पर एक सच्चाई बताना चाहूँगा।''

''वह सच्चाई क्या है'' आतुर हो कमला ने पूछा।

''चंद्रहार की चोरी किसी ने नहीं की। स्नान करने गयी तुम वहीं भूलकर चली गयी। मैंने उसे लेकर छिपाया। शहर लौटने के बाद उसे गहनों की दूकान में दे दिया। वह दुकानदार मेरा मित्र है। मैंने नाटक किया, मानों मैंने उसे खरीदा। असल में मैंने अपना घर गिरवी पर नहीं रखा। कोई कर्ज़ भी नहीं लिया। अब इस रक़म से जो गहना तुम्हें पसंद है, खरीद लो'' मुस्कुराते हुए बैनर्जी ने कहा।

एक-दो क्षण आनंद से खिलखिला उठी कमला। फिर पति के दोनों हाथों को अपनी आँखों से लगाते हुए कहा ''कभी मैं अबोध थी। मुझमें अपनी सुँदरता पर अहंकार भी था। भगवान-प्रदत्त यह सुँदरता अब भी इस आयु के अनुकूल मौजूद है। मुझे चमकीले गहनों और साड़ियों की क्या ज़रूरत है? इस धन से छोटा-सा नारियल का एक बग़ीचा खरीदेंगे। साहुकार की नौकरी छोड़िये और बग़ीचे की देखभाल कीजिये या कोई व्यापार शुरू कीजिये। भविष्य में हमें पैसों की बहुत ज़रूरत पड़ेगी। दो से हम तीन होनेवाले हैं।

बेनर्जी ने इस नयी कमला की तथा गहना खो जाने के पहले कमला की तुलना की तो उसे लगा कि उन दोनों में आकाश-पाताल का अंतर है।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता : : पुरस्कार रु. १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, मार्च, १९९७ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

S.G. SESHAGIRI

S.G. SESHAGIRI

* उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। * '२० जनवरी, ९७ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। * अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। * दोनों परिचियोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास - २६.

नवंबर, १९९६ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **अक्षर अक्षर ज्ञान बढ़ाओ**

दूसरा फोटो : **नृत्य करो मन बहलाओ**

प्रेषक : **अल्पना गोयल**

गोयल भवन, रेल्वे रोड, सहारनपुर-२४७ ००१.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चंदा : रु. ७२/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process private Ltd., 188, N.S.K. Salai, Madras - 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras - 600 026 (India), Controlling Editor: NAGI REDDI.